आज़ादी का अमृत महोत्सव

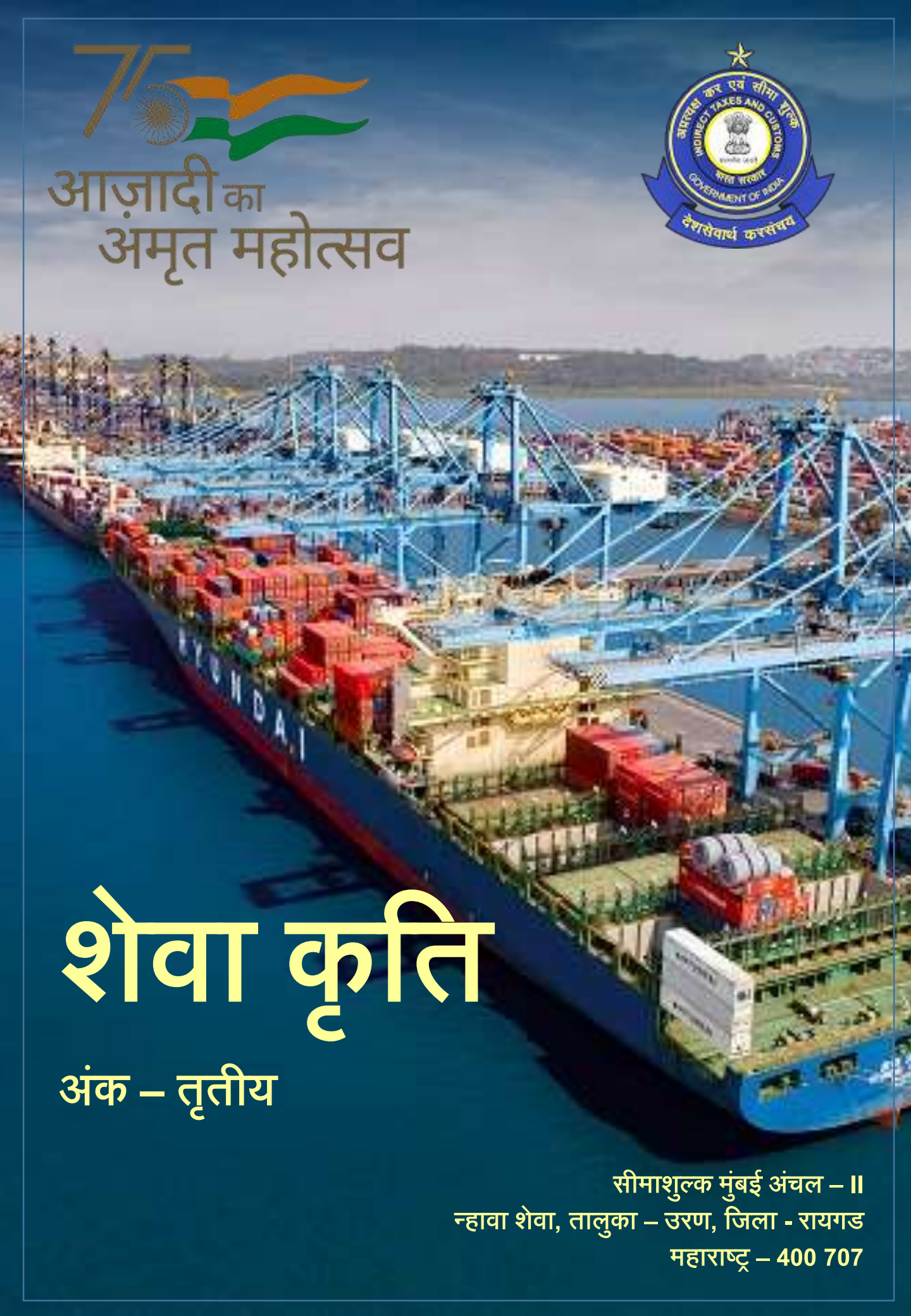

शेवा कृति

अंक – तृतीय

सीमाशुल्क मुंबई अंचल – II
न्हावा शेवा, तालुका – उरण, जिला - रायगड
महाराष्ट्र – 400 707

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विभागीय गृह पत्रिका

शेवा कृति

वर्ष : 2021 अंक : तृतीय

मुख्य संरक्षक

मोहन कुमार सिंह

मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क

संरक्षक

उ० निरंजन

प्रधान आयुक्त

प्रधान संपादक

इश्तिखार बेग

आयुक्त

संपादक मण्डल

एन. वी. कुलकर्णी
आयुक्त

किरन वर्मा
आयुक्त

डी. एस. गर्ब्याल
आयुक्त

(पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकार के निजी विचार हैं, संपादक मण्डल का इनसे सहमत होना अनिवार्य नही है)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

मोहन कुमार सिंह
मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क

मेरे लिए अत्यंत हर्ष, सौभाग्य और संयोग का विषय है कि मुख्य आयुक्त की भूमिका में मुंबई आगमन के साथ साथ 'शेवा कृति' के इस तीसरे अंक से जुड़ने का भी अवसर मिल रहा है। मुंबई का परिचय महानगरी, मायानगरी, राजस्व नगरी जैसे संबोधनों से जुड़ा हुआ है । सभी विशेषण एक विशेष कार्यशैली की ओर आकर्षित करते हैं । सीमाशुल्क मुंबई अंचल – II, 'न्हावा शेवा' के ग्रामीण क्षेत्रों की तटीय प्राकृतिक सुंदरता और समुद्री पोर्ट के विस्तृत आधुनिक नेटवर्क के मध्य कार्य करता है।

विभागीय पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन सदैव से ही इतिहास और वर्तमान का हिस्सा रहा है और भाषा के प्रचार प्रसार में इसका महत्वपूर्ण योगदान है । सीमाशुल्क मुंबई की विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' का तीसरा अंक इसी मार्ग पर बढ़ता हुआ कदम है । यह पत्रिका शासकीय सूचनाओं और व्यक्तिगत रुचि के विषयों का एक संतुलित आयाम प्रस्तुत करती है एवं आपकी प्रतिक्रियाएँ इसे और भी समृद्ध करेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। पत्रिका में योगदान करने वाले सभी रचनाकार, विभागीय आलेखक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के संपादक मण्डल को भी साधुवाद जिनके मार्गदर्शन में सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II में इस पत्रिका का सफल प्रकाशन हो रहा है।

'शेवा कृति' को नए आयाम मिलें, यही कामना करता हूँ।

मोहन कुमार सिंह
मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

उ. निरंजन
प्रधान आयुक्त

एक सामान्य मनुष्य लगभग हज़ार शब्दों का ही 6000प्रयोग करते हुए जीवन पूरा कर लेता है, अधिकांश निज भाषा के और कुछ अन्य भाषाओं बोलियों के भी। इसी तरह संसार में भ्रमण की भी एक सीमा है, बहुत कुछ है जो रह जाता है देखने से और छूट जाता है अनुभव करने से। इस पूरी यात्रा के विभिन्न अनुभव विभिन्न माध्यमों से प्रदर्शित होते रहते हैं।

शासकीय दायित्वों को पूर्ण करते हुए कुछ शासकीय और व्यक्तिगत अभिरुचियों का यही प्रदर्शन विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' में प्राप्त करने की अभिलाषा रखता हूँ। इस वर्ष ये 'शेवा कृति' ईपत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रही है इसीलिए - इसके अध्ययन का अनुभव भी कुछ अलग होगा।

संपादक मण्डल के सहयोगियों को और सभी रचनाकारों को शेवा कृति के तीसरे अंक के प्रकाशन पर मेरी शुभकामनायें।

निरंजन

उ निरंजन.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

एन. वी. कुलकर्णी
आयुक्त

यह खुशी का विषय है कि विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' के आगामी अंक का ई प्रकाशन किया जा रहा है। अब ये पत्रिका हमारे हाथों में हमेशा रह सकती है। हम विभिन्न तकनीकी उपकरणों के माध्यम से इसे कभी भी पढ़ सकते हैं। तकनीक का ये अच्छा उपयोग है और पर्यावरण की दृष्टि से भी लाभदायक है। पत्रिका के संपादक मण्डल के साथ सभी रचनाकारों का ये परिश्रम पत्रिका के माध्यम से विभाग और कार्यालय को समुचित प्रस्तुत करेगा, ऐसी मैं आशा करता हूँ ।

'शेवा कृति' के तीसरे अंक के प्रकाशन पर मेरी शुभकामनायें।

एन. वी. कुलकर्णी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

किरन वर्मा
आयुक्त

सीमाशुल्क मुंबई अंचल–II की विभागीय पत्रिका के प्रकाशन की सूचना पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। आर्थिक गतिविधियों के गढ़ के रूप में पहचाने जाने वाले इस सीमाशुल्क भवन में पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में एक सुखद अनुभूति है।

सीमाशुल्क विभाग में विभागीय पत्रिकाओं से मेरा परिचय पुराना है अपितु इस पत्रिका के साथ जुड़ते हुए मैं संतुष्टि का अनुभव भी करती हूँ। ये एक यात्रा जैसी है जिसमें नए पड़ाव निरंतर आते रहते हैं। पत्रिका का ई प्रकाशन एक नया तकनीकी पड़ाव है। हमें आगामी प्रकाशनों में भी बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों को और संपादक मण्डल के प्रति शुभकामनायें प्रेषित करती हूँ।

किरन वर्मा

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

डी. एस. गर्ब्याल
आयुक्त

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि मुंबई सीमाशुल्क अंचल-II की विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' का आगामी अंक ई प्रकाशन के रूप में प्रकाशित हो रहा है।

जैसा कि सबको विदित है कि भाषा अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है एवं केंद्रीय शासन के अंतर्गत आने वाले कार्यालयों में राजभाषा नीति का अनुपालन एक महत्वपूर्ण दायित्व होता है। इसी क्रम में अथक प्रयासों से प्रकाशित होने वाली पत्रिका एक सराहनीय कदम है जो आने वाले समय में मार्गदर्शन का कार्य करेगी।

मुझे यह जानकर भी बहुत खुशी हुई है कि यह पत्रिका हिन्दी के अलावा मराठी और अंग्रेजी भाषा में भी रचनाएँ प्रस्तुत करती है। इस प्रकार के प्रयासों से राजभाषा अनुपालन की दिशा में और अधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

मुझे विश्वास है कि विभागीय पत्रिकाओं का प्रकाशन निरंतर जारी रहेगा।

शेवा कृति के तीसरे अंक के ई - प्रकाशन पर मेरी शुभकामनायें।

डी. एस. गर्ब्याल

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इश्तिखार बेग
आयुक्त

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

संपादकीय.....

मैं सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II की विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' के तीसरे अंक का हिस्सा बन कर खुशी महसूस कर रहा हूँ। मुंबई सीमाशुल्क अंचल - II एक व्यापक कार्य विन्यास रखता है और राजस्व के इस सबसे बड़े संग्राहक कार्यालय की कार्यप्रणाली को समझते हुए अधिकारियों की अन्य अभिरुचियों को भी जानने का अवसर इस पत्रिका के माध्यम से मुझे प्राप्त हुआ जो आपको भी रुचिकर लगेगा, आनंदित करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। मुझे जानकारी मिली है कि इस कार्यालय ने भी कोविड-19 संक्रमण की विभीषिका झेली है और विभाग ने निष्ठावान और समर्पित अधिकारी भी खोए हैं, यह पत्रिका हम उन दिव्यात्माओं को समर्पित करते हैं।

तकनीकी मंचों का सार्थक प्रयोग आज की आवश्यकता बन चुका है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सिनेमा, किताबें, पत्रिकाएँ अध्ययन हेतु उपलब्ध हैं। 'शेवा कृति' का ई-प्रकाशन भी इसी क्रम में एक सार्थक पहल है।

आपके सुझावों से हम इस परंपरा को और समृद्ध कर सकेंगे।

इश्तिखार बेग

राजस्व सचिव का दौरा – सितंबर 2021

सीमाशुल्क मुंबई अंचल – II के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समूह चित्र बाएँ से (कुर्सियों पर):
सर्वश्री विधान चन्द्र, अपर आयुक्त; डी. एस. गर्ब्याल, आयुक्त; इश्तिखार बेग, आयुक्त; राजीव तलवार, सदस्य(सीबीआईसी); श्री तरुण बजाज, राजस्व सचिव; उ. निरंजन, प्रधान आयुक्त; किरण वर्मा, आयुक्त; एन. वी कुलकर्णी, आयुक्त; राजीव रंजन, अपर आयुक्त (बाएँ से (खड़े हुए): अपर आयुक्त/संयुक्त आयुक्त एवं उपायुक्त, सीमाशुल्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राजस्व सचिव श्री तरुण बजाज का दौरा – सितंबर 2021

गणतंत्र दिवस समारोह-2021

आयोजन विवरण –तत्कालीन प्रधान मुख्य आयुक्त श्री राजीव तलवार (वर्तमान में सदस्य, सीबीआईसी) सम्मान गारद निरीक्षण एवं ध्वजारोहण पश्चात संबोधित करते हुए।

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा
सीमाशुल्क मुंबई अंचल – II

महत्वपूर्ण राजस्व आँकड़े 2020-21

क्रम संख्या	पैरामीटर	कुल (रुपये करोड़ में)
1	सकल राजस्व	**81345**
2	शुल्कवापसी की निकासी	**4280**
3	धनवापसी की निकासी	**78**
4	नेट राजस्व	**76991**
5	आई जी एस टी धनवापसी संवितरण	**16011**
6	टी ई यू की कुल संख्या	**4676826**
7	स्कैन किए गए कंटेनरों की संख्या (टीईयू में)	**185749**
8	फ़ाइल किए गए बिल ऑफ इंट्री की संख्या (व्यावसायिक उपभोग +माल गोदाम+ x-बॉन्ड)	**724697**
9	शिपिंग बिलों की संख्या (LEO दिया गया)	**1299138**
10	आयातित बस्तुओं का आकलन योग्य मूल्य (व्यावसायिक उपभोग +माल गोदाम+ x-बॉन्ड)	**364226**
11	शुल्कदेय माल का मूल्य (बीई का व्यावसायिक उपभोग + x-बॉन्ड)	**305534**
12	शुल्कमुक्त माल का मूल्य (बीई का व्यावसायिक उपभोग + x-बॉन्ड)	**36447**
13	अधिसूचना के अनुसार छोड़ा गया राजस्व	**33780**
14	योजना के अनुसार छोड़ा गया राजस्व	**14147**
15	डी.पी.डी. कंटेनरों की संख्या (टीईयू)	**776980**

॥ श्रद्धांजलि ॥

स्व. श्री नरेश कुमार मंगिलिपेल्ली,
रसायन सहायक
डीवाईसीसी प्रयोगशाला, सीमाशुल्क मुंबई, अंचल –II , न्हावा शेवा
(दिनांक 07-04-1986 – 29.04.2021)
सेवा प्रारंभ की : 24.04.2019

संघर्षों से भरे बचपन ने नरेश को एक दयालु और सबकी मदद करने वाला इंसान बनाया । उन्ही दिनों हम मिले और हमने निश्चय किया कि हम जीवन भर साथ रहेंगे । मेरे और मेरी बेटी रिद्धी, जिसे उन्होने बहुत ही लाड़ प्यार से पाला था, के लिए तो नरेश जैसे जीवन का पर्याय ही थे । एक परिवार के रूप में हमने अपने तीन वर्ष के छोटे से वैवाहिक जीवन में कुछ बहुत ही अच्छे पल बिताए । उनके जाने के बाद हमारा जीवन पूरी तरह से बिखर गया । वो जहां भी रहें खुश रहें .....

.....उनकी धर्मपत्नी
श्रीमती जी. कविता सूर्यवंशी

हमारे प्रिय श्री नरेश के आकस्मिक निधन की दुखद और झकझोर देने वाली सूचना प्राप्त हुई । रसायन सहायक के रूप में 02 वर्ष पूर्व ही वह विभाग से जुड़े थे । वह 'कभी हार न मानने वाली' मनोवृत्ति के साथ-साथ एक निष्ठावान और समर्पित व्यक्ति थे । उनके आकस्मिक निधन से जो खालीपन आया है वह तो सदा रहेगा लेकिन हम उनसे जुड़ी यादों को सदा संजो कर रखेंगे । उनके परिवार में उनकी पत्नी और 02 साल की बेटी है । हम सब प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनके शोक संतप्त परिवार को उनके असामयिक निधन की इस दुखद घटना का सामना करने की शक्ति प्रदान करें । समस्त विभाग अपनी संवेदना प्रकट करता है । ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे ।

-जेएनसीएच प्रयोगशाला के सभी अधिकारी और कर्मचारीगण

स्व. श्री लवकुमार जी. धोत्रे ,
मूल्यनिरूपक
सीमाशुल्क मुंबई, अंचल –II , न्हावा शेवा
(दिनांक 01.08.1964 – 29.07.2020)
सेवा प्रारंभ की :- 06.05.1986

सफल मनुष्य वही है -
जिसने जीवन को हँसकर जिया
जिसने सबको प्यार दिया
जिसने ज्ञानियों का आदर किया और बच्चों को प्यार दिया
जिसने अपनी जिम्मेदारियों को पूरा किया
जो इस संसार को पहले से बेहतर बनाकर गया जिसने इस कायनात की खूबसूरती को सराहा जिसने दूसरों में सर्वश्रेष्ठ की तलाश की और अपना सर्वश्रेष्ठ सबको दिया।

- .....**उनकी प्यारी बेटी**
- **श्रीमती निशिगंधा धोत्रे**

लवकुमार जी बहुत ही विनम्र स्वभाव के, सादगी से परिपूर्ण एवं सभी के प्रिय अधिकारी थे। हमने वर्षों तक साथ साथ काम किया। वह हमेशा से हँसमुख स्वभाव के निस्वार्थ भाव वाले एवं सबकी मदद करने वाले व्यक्ति थे। परमेश्वर उस महान आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवार को इस विकट पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करे।

- ..... **उनका सहयोगी एवं मित्र**
- **श्री डी. वाई. लिमजे, मूल्यनिरूपक**

हम सभी श्री लवकुमार जी. धोत्रे जी के आकस्मिक निधन पर शोक संतप्त हैं। वह विभाग के एक प्रतिभाशाली अधिकारी थे और विभागीय जिम्मेदारियों को पूरी लगन और परिश्रम से पूरा करते थे। समय और काम पर पैनी नजर रखने वाली उस प्रतिभा की भरपाई नहीं की जा सकती हालांकि उनके अनुभवों से हमने जो सीखा है, वह हमारे लिए बहुमूल्य है। तीक्ष्ण बुद्धि के साथ साथ वह बहुत ही मित्रवत स्वभाव के व्यक्ति भी थे। मैं उन्हें अपनी स्मृतियों में रखते हुए विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

..... **उनके सहयोगी एवं मित्र**
श्री योगेंद्र सिंह, मूल्यनिरूपक

स्व. श्री गंगाधर एम. गौड़
मूल्यनिरूपक
सीमाशुल्क मुंबई, अंचल –II , न्हावा शेवा
(दिनांक 03.08.1974 – 06.06.2021)
सेवा प्रारंभ की :- 23.07.1993

श्री गंगाधर गौड़ तो हमारे विभाग के बहुमूल्य रत्न के समान थे। वह एक ईमानदार और परीश्रमी अधिकारी थे जो सौंपी गई हर जिम्मेदारी को बखूबी पूरा करते थे। एक पिता और पति के रूप में एक परिपूर्ण इंसान थे। उनके आकस्मिक निधन ने हमारे जीवन में एक खालीपन छोड़ दिया है। ईश्वर उनकी आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करें। ओम शांति।

उनके सहयोगी एवं वरिष्ठ
श्री अभिजीत थोरात ,उप आयुक्त

कार्य तो प्रत्येक व्यक्ति कर ही लेता है लेकिन किसी कार्य को मुस्कुराहट और गंभीरता के साथ करना व्यक्तित्व को और निखारता है। वे मुझे सदा अपने मिलनसार व्यक्तित्व के लिए ही याद रहेंगे। मैं स्तब्ध हूँ कि मुंबई शहर के मेरे पहले मित्रों में शामिल श्री गौड़ अब मेरे साथ नही हैं। सादर नमन आपको आदरणीय। सादर श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

उनके अभिन्न मित्र और सहयोगी
मनमोहन धीर, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वह एक प्रिय मित्र और सहयोगी थे , सहृदयी होने के साथ साथ उनके मुख पर सदा मुस्कान छाई रहती थी। दयालु होने के साथ साथ वह एक सादगी से भरे हुए इंसान थे। हम सबकी स्मृतियों में वह सदा रहेंगे। ईश्वर उनके परिजनों को इस दुखद क्षण का सामना करने की शक्ति दे। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

उनका सहयोगी एवं मित्र
श्री विल्सन डिसूजा, अधीक्षक

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि मुझे गंगाधर गौड़ जी के साथ कुछ समय तक काम करने का अवसर मिला, लेकिन उस कम समय में भी मुझे पता चला कि वह प्रतिभा के कितने धनी इंसान थे । वह सबकी मदद करने वाले विनम्र व्यक्ति थे। ईश्वर उस नेक आत्मा को शांति प्रदान करे ।

..... उनकी सहयोगी एवं कनिष्ठ
मती अंजली नवले, मूल्यनिरूपक

शेवा कृति - 2021

इस अंक में ...

संदेश मंजूषा	@आरंभिक पृष्ठों पर
संपादकीय	@पृष्ठ संख्या 08 पर
श्रद्धांजली	@पृष्ठ संख्या 13 पर

काव्य सरिता से ...

शंकर:एक जीवन ऐसा भी -श्रेयांश मोहन, उप आयुक्त	@ पृष्ठ संख्या 19 पर
बातें तुम्हारी - संजय क्षीरसागर, सहायक आयुक्त	@ पृष्ठ संख्या 21 पर
अतिथि का पन्ना - मुकेश मिश्रा, अधीक्षक	@ पृष्ठ संख्या 27 पर
कुछ कह जाएँ - श्रेयांश मोहन, उप आयुक्त	@पृष्ठ संख्या 28 पर
चुनें मुक़ाबले को – प्रकृति मिश्रा	@पृष्ठ संख्या 34 पर
एक कविता – अवधेश कुमार, अधीक्षक	@ पृष्ठ संख्या 40 पर
प्रतीक्षा करो – रवि रोशन, अधीक्षक	@पृष्ठ संख्या 42 पर
मेरा गाँव – अजीत कुमार पाण्डेय, कर सहायक	@ पृष्ठ संख्या 45 पर
लिपट तिरंगा लेटा है – अवनीश यादव, निरीक्षक	@पृष्ठ संख्या 49 पर

विविध से ...

डूडल - आशीष कुमार गुप्ता, निरीक्षक	@पृष्ठ संख्या 41 पर
रेखाचित्र – अमेश ज्योति डावरे, मूल्यनिरूपक	@ पृष्ठ संख्या 50 पर
दृश्यावली – सचिन गुप्ते, सहायक आयुक्त	@पृष्ठ संख्या 55 पर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आलेखों के गलियारे से ...

कोविड –19 परीक्षा की घड़ी- रवीन्द्र कुमार द्विवेदी, अधीक्षक @ पृष्ठ संख्या 30 पर

१९७१ एका सुवर्णकाळाची पन्नाशी ..
अनिल पी. मोहिते, सहायक आयुक्त @पृष्ठ संख्या 22 पर

फ़ाइलों के निपटान में हिन्दी का प्रयोग -
रूपेश शंकर सक्सेना, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी @ पृष्ठ संख्या 35 पर

कोडिंग -योगेंद्र सिंह, मूल्य निरूपक @पृष्ठ संख्या 43 पर

कम्फर्ट जोन - रूपेश शंकर सक्सेना, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी @ पृष्ठ संख्या 46 पर

बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ जगमोहन, आशुलिपिक @ पृष्ठ संख्या 54 पर

विभागीय प्रकोष्ठ से ...

राजस्व सचिव का दौरा @ पृष्ठ संख्या 09 पर

राजस्व आंकड़े 2020-21 @ पृष्ठ संख्या 11 पर

राजभाषा दिशानिर्देश बोर्ड @ पृष्ठ संख्या 37 पर

कंटेनर स्कैनिंग डिविजन, एक रिपोर्ट @ पृष्ठ संख्या 39 पर

हिन्दी पखवाड़ा समारोह @ पृष्ठ संख्या 53 पर

गणतन्त्र दिवस – 2021 समारोह @ पृष्ठ संख्या 13 पर

स्वच्छता पखवाड़ा – 2021 आयोजन @ पृष्ठ संख्या 51 पर

वेबिनार (नशामुक्ति अभियान पर) @ पृष्ठ संख्या 16 पर

ई पत्रिका निर्माण : हिन्दी अनुभाग द्वारा
यह ई-पत्रिका www.jawaharcustoms.gov.inसे डाउनलोड की जा सकतीहै

आज़ादी का अमृत महोत्सव : भारत छोड़ो आंदोलन की वर्षगांठ पर
नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो एवं महाराष्ट्र नशाबंदी मण्डल एवं सीमाशुल्क मुंबई अंचल – II
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित नशाबंदी पर वेबिनार
(दिनांक 09 अगस्त -अगस्त क्रान्ति दिवस)

बाएँ से डॉ. अजित मगदुम, श्री समीर वानखेड़े, ज़ोनल डाइरेक्टर, एनसीबी, बासको डी'सूज़ा, राष्ट्रीय प्रशिक्षक, श्रीमती वर्षा विद्या विलास, महासचिव, सिद्धार्थ जाधव,अभिनेता, डॉ. सागर मुंडदा
अक्षय कुमार, अभिनेता एवं आयोजक संचालक (नीचे)

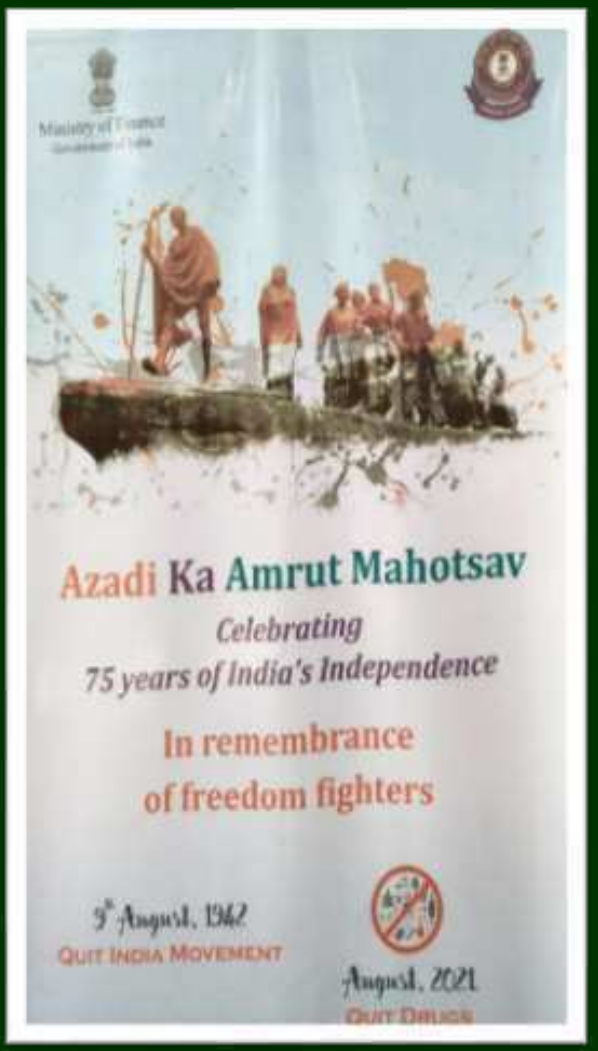

॥ शंकर : एक जीवन ऐसा भी ॥

आठवीं सदी में स्वर्णिम गुप्त साम्राज्य का अंत हो चुका था। कन्नौज में अब हर्षवर्धन भी नहीं रहे थे। आर्यावर्त के केंद्र में नर्मदा के दोनों ओर राष्ट्रकूट अपने पांव पसार रहे थे। उत्तर में प्रतिहार, पूर्व में पाल, दक्षिण में चालुक्य साम्राज्य से राष्ट्रकूटों की मुठभेड़ लगातार जारी थी। अभी रामायण का तमिल में अनुवाद नहीं हुआ था और दक्षिण भारत के मंदिरों में गोपुरम अपनी महती विशिष्टता प्राप्त नहीं कर पाया था। ऐसे में केरल के एक गरीब नंबूदरी परिवार में जन्म होता है शंकर का।

बहुत कम उम्र में ही उनके पिता नहीं रहे। शंकर ने केरल में जन्म और केदारनाथ में समाधि लेने के बीच की 32 वर्षों की छोटी सी किंतु विराट यात्रा, दर्शन,साहित्य और धामों को बनाने में तय की। कोई भी इस बात से हैरान हो जाएगा कि एक साधारण व्यक्ति ने अपनी असाधारण क्षमता से 12 ज्योतिर्लिंग, 18 शक्तिपीठ और चार विष्णु धाम के माध्यम से पूरे भारत को एक सांस्कृतिक, भौगोलिक इकाई में नाप दिया है।

आज भी अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा हिस्सा इस "पिलग्रिमेज रूट" के जरिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से अपना पेट भरता है और भारत की सुंदरता और विविधता से दो चार होता है। 1940 के आसपास चर्चिल ने भारत के विषय में कहा कि भारत को राष्ट्र कहना ठीक उसी तरह का होगा जैसे इक्वेटर को एक राष्ट्र कहना। ऐसे में 8 वीं सदी में एक सन्यासी द्वारा पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास अद्भुत और आश्चर्यजनक लगता है।

19वीं सदी में जर्मन दार्शनिक नीत्शे ने कहा कि "गॉड इज डेड"। हमारे समकालीन वैज्ञानिक और दार्शनिक स्टीफन हॉकिंस ने एक कदम आगे बढ़ते हुए यह कह दिया कि "नाऊ फिलॉसफी इस डेड"।

लेकिन मुझे लगता है कि एक बिंदु ऐसा आता है जहाँ पर विज्ञान जवाब देना बंद कर देता है और अंततः अपने ज़वाब दर्शन में ही ढूंढता है। आदि गुरु शंकराचार्य भारत की "विमर्श संस्कृति" के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं जिन्होंने मीमांसक विद्वान मंडन मिश्र और उनकी धर्मपत्नी उदय भारती को शास्त्रार्थ में हराया। उसके बाद मंडन मिश्र और उनकी पत्नी दोनों ही शंकराचार्य के 'फॉलोअर' बन गए। इस शास्त्रार्थ की कहानी बहुत ही रोचक है। कुछ लोग कहते हैं कि हम ये कैसे मान लें कि हमारे आसपास जो चीजें दिख रही हैं वे असल में हैं ही नहीं। पूरी दुनिया माया कैसे कही जा सकती है?

असल में शंकर के माया की अवधारणा यह नहीं कहती कि कोई भी वस्तु जो हम देखते हैं, कुछ है ही नहीं। शंकर की माया का अर्थ ये है कि हम अपनी पंच-इंद्रियों से वस्तुओं को उस तरह नहीं देख पाते जिस तरह वे हैं। हम उन्हें उसी तरह देख पाते हैं जिनसे हमारा 'सर्वाइवल' संभव हो पाए, उस तरह नहीं जिस तरह वे वास्तव में हैं। उदाहरण के लिए विज्ञान के अनुसार हम हर दिन जो खाना खा रहे हैं और जो पानी पी रहे हैं, उससे रोज हमारा शरीर 7% तक परिवर्तित होता है। ऐसे में पूरा का पूरा शरीर दो हफ्तों में वह शरीर नहीं रहता जिसे हम अपना शरीर मानकर बैठे रहते हैं। वह पल प्रतिपल परिवर्तित होता रहता है और एक वर्ष के भीतर हमारा पूरा शरीर आण्विक स्तर पर भी पूरी तरह परिवर्तित हो चुका होता है लेकिन हमें जस का तस ही दिखता है, महसूस होता है। यही माया है।

आज शंकराचार्य के 'अद्वैतवाद' ने क्वांटम फिजिक्स, न्यूरोलॉजी के क्षेत्रों में कुछ क्रांतिकारी संकल्पनाओं को जन्म दिया है। एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपने छोटे से जीवन में इतने बड़े काम किए कि आज भी हमारा दर्शन, संस्कृति और राजनीति की समझ उनके विचारों से बहुत हद तक प्रभावित है। (तथ्य संकलित)

श्रेयांश मोहन
उपायुक्त,सीमाशुल्क

वक़्त मेरा
मन मेरा
दिल मेरा
दिमाग मेरा
और
याद तुम्हारी !!
शब्द मेरे
भावना मेरी
जुबान मेरी
ख्वाब मेरे
और
बाते तेरी !!
गीत मेरा
बोल मेरे
संगीत मेरा
साज मेरे और
तारीफे तेरी !!
क्या कहूंगा
कैसे कहूंगा
कितना कहूंगा
क्या न कहूंगा
सोचा तो है
पर भूल जाता हूं
जब सुनता हूं
बाते तुम्हारी !!

संजय क्षीरसागर
सहायक आयुक्त

'१९७१' - एका सुवर्णकाळाची पन्नाशी.....

सुमारे दहा-पंधरा वर्षापूर्वीचा एक किस्सा आहे. कोणत्यातरी टिव्ही चैनलने त्यावेळी वयाची चाळीस-पंचेचाळीसीत असलेल्या व्यक्तींचा एका चॅनलवर सर्वे केला की त्यांच्या आयुष्यातील सर्वात महत्त्वाचा काळ किंवा सुवर्णकाळ कोणता... त्यावेळी बहुतेक लोकांनी १९७१ च्या आसपासचा काळ हा त्यांच्या आयुष्यातला पाहिलेला अथवा अनुभवलेला सुवर्णकाळ असं त्यावेळी त्यांनी सांगितलं .

आज हि पिढी वयाच्या ६०-६५च्या दरम्यान असेल, १९७१ दरम्यान ती त्यांच्या वयाच्या १५-२० वर्षांच्या दरम्यान होती . त्यांच्या संपूर्ण आयुष्याच्या कारकिर्दीत त्यांना १९७१ च्या आसपासचा काळ सुवर्णकाळ असा वाटला त्यामागचं कारण काय असावं याचा थोडासा मागोवा घेण्याचा प्रयत्न केला.

१९४७ साली आपला देश स्वतंत्र झाला. त्या काळी भारताची संपूर्ण समाज व आर्थिक व्यवस्था शेतीवर होती. खूप सारा समाज हा गावी वास्तव्य करणारा व शेतीवर अवलंबून रहाणारा होता. औद्योगीकरणाचा तसा ग्रामीण भागावर किंवा त्यांच्या राहणीमानावर विशेष असा प्रभाव पडला नव्हता. ब्रिटिश काळात भारतातील काही शहरं औद्योगिकीकरणा मध्ये प्रगत झाली होती, परंतु जी काही प्रगती झाली होती ती मर्यादित होती. त्या काळच्या आपल्या भारतीयांची मानसिकता पुरोगामी विचाराची होती त्यांच्यावर सामाजिक, धार्मिक विचारांचा खूप मोठा प्रभाव होता आणि तो त्यांच्या व्यवहारात किंबहुना त्यांच्या वागण्यात, पेहरावात जाणवत होता.

१९४७ च्या आसपास जन्मलेली पिढी १९७०-७१ च्या आसपास स्वतंत्र भारताची हि सर्वात पहिली पिढी तरुण पिढी उदयास आली होती. शिक्षणाची आस आणि कास धरलेल्या या पिढीला नवे चैतन्यमय विश्व अनुभवायला मिळत होते. याच काळामध्ये म्हणजे १९७१ च्या दरम्यान भारताच्या जवळ जवळ सर्वच महत्त्वाच्या क्षेत्रांत खूप मोठे आणि आमूलाग्र बदल घडत होते,आणि त्याचा दिर्घ किंबहुना स्वातंत्र्याच्या नंतरच्या इतिहासात कायमचा ठसा उमटविला.

१९७१ ला भारतातील राजकारणांत राजकीय घडामोडींची खूप मोठ्या प्रमाणात उलथापालथ झाली. त्याचबरोबर औद्योगिक क्षेत्र, क्रीडा ,मनोरंजन आणि इतर क्षेत्रातही भारताच्या नव्या पिढीने एक मोठी मुसंडी मारली आणि आपल्या कर्तुत्वाने स्वतःचेच नव्हे, तर संपूर्ण भारत देशाचे नाव उज्ज्वल केले . या त्यांच्या कर्तुत्वाने पुढील कित्तेक वर्ष त्या क्षेत्रांचा चेहरामोहरा बदलला तसेच या सर्व बदलांचा त्या काळच्या तरुण पिढीवर खूप मोठा प्रभाव पडल्याचे जाणवतं.

एक वेगळ्या प्रकारची नवीन दिशा आणि ऊर्जा त्या- त्या व्यक्तीने केलेल्या कार्याने तरुणांवर पडली आणि एक नवी उमेद तरुणांमध्ये जाणवू लागली.

भारतीय राजकारणांत सर्वात मोठी उलथापालथ म्हणजे, इंदिरा गांधींचे भारतीय राजकारणात रितसर झालेले आगमन. राष्ट्रीय काँग्रेस मध्ये खूप मोठा बदल झाला होता. त्यावेळच्या तरुण पिढीला अभिप्रेत असलेली व नवीन संकल्पना घेऊन आलेले इंदिरा गांधी हे नांव भारतीय राजकारणात उदयास आले. त्यांच्या या कर्तुत्वची खरी सुरुवात झाली ती १९७१ साली. वास्तविक पाहता इंदिरा गांधी यांचा राजकीय प्रवास १९६४ च्या पंडित नेहरू यांच्या निधनानंतर, विशेषतः १९६६ साली तात्कालिन पंतप्रधान लालबहादूर शास्त्री यांच्या आकस्मित निधनानंतर खरी सुरवात झाली. त्या राज्यसभेवर निवडून आल्या होत्या परंतु त्यांना लोकसभेवर निवडून येण्यासाठी त्यांना १९७१च्या सार्वजनिक निवडणुकी पर्यंतची वाट पाहावी लागली आणि त्या रीतसर व लोकशाही पद्धतीने निवडणुक लढून भारताच्या पंतप्रधान झाल्या. (तसे पहाता १९७१ ची सार्वजनिक निवडणूक हीच पुढे जाऊन १९७५ च्या भारताच्या आणीबाणीला कारणीभूत ठरली).

असो, इंदिरा गांधी यांनी १९६९ मध्ये १४ बँकेचे केलेले राष्ट्रीयकरण तसेच ब्रिटीश काळातील राजे-महाराजे यांच्या तनख्वा पद्धत बंद करणे हे नवीन पिढीला नव्या युगाची जाणिव करुन देणारी ठरली . यापुढे जात १९७१ साली पंतप्रधान इंदिरा गांधी यांनी लाइफ इन्शुरन्स आणि कोळशाच्या खाणींचे राष्ट्रीयीकरण करत पारंपारिकतेला फार मोठा धक्का दिला होता आणि या सारख्या खाजगी संस्थांचे राष्ट्रीयकरण करत काही खाजगी संस्था एकछत्री भारत सरकारच्या अंमलाखाली आणल्या. हा खूप मोठा आर्थिक बदल घडत होता. या बदलांची सर्वसामान्यांच्या आयुष्यात कोणात्या ना कोणत्या प्रकारे सकारात्मक बदल घडत होता. त्यातच त्यांनी 'गरीबी हटाव' चा दिलेला नारा हा त्या काळातील इंदिराजींचा सर्वसामान्य जनतेतीशी ओळख देणारा दुवा ठरला होता. भारताची पहिली महिला पंतप्रधान म्हणून देशातच नव्हे जगात भारताची एक नवी व वेगळी ओळख निर्माण केली. पंतप्रधान म्हणून इंदिरा गांधी यांचा भारतीय राजकारणावर, समाजकारणावर खुप मोठा दबदबा आणि प्रभाव होता आणि तो त्यांच्या निधनापर्यंत म्हणजे १९८४ पर्यंत भारताच्या राजकारणावर एक खांबी तंबू याप्रमाणे राहिला.

त्यांच्या या संपूर्ण राजकीय कारकिर्दीत १९७१ ची सार्वजनिक निवडणूक हीच मैलाचा दगड ठरली. याच दशकामध्ये म्हणजे १९७१ला तरुण उद्योगपती रतन टाटा यांनी आपल्या मागच्या पिढी च्या पावलावर पाऊल ठेवत 'टेल्को' या कंपनीच्या निमित्ताने उद्योग क्षेत्रात पदार्पण केले.

या अगोदर औद्योगिक क्षेत्रात १९६८ला धीरूभाई अंबानी या तरुणाने ' रिलायन्स' हि संस्था उद् यास आणली होती. या दोन्ही उद्योगपतींनी या नंतर आपल्या कर्तृत्वाने देशातच नव्हे तर संपूर्णजगभर आपले औद्योगिक साम्राज्य पसरवीले आणि त्याची सुरुवात १९७१ च्याच दरम्यान झाली...

भारताने क्रीडा क्षेत्रात विशेषतः क्रिकेटमध्ये आपली शान व मान उंच केली ती १९७१ सालीच...!!! १९७१ साली भारतीय संघ कर्णधार अजित वाडेकर यांच्या नेतृत्वाखाली भारतीय संघाने बलाढ्य वेस्ट इंडिज संघाला त्यांच्याच देशात नमवून जागतिक क्रिकेटमध्ये आपले मानाचं स्थान मिळविले. याच दौऱ्यामध्ये भारताला असा एक क्रिकेटर सापडला, ज्याने भारतीय क्रिकेटला आणि विशेषतः भारतीय फलंदाजीला उच्च शिखरावर नेऊन ठेवले, ते नांव म्हणजे विक्रमादित्य सुनील गावस्कर ....गावस्कर यांनी १९७१च्या आपल्या पदार्पणातच या दौऱ्यामध्ये आपल्या फलंदाजीने संपूर्ण क्रिकेट विश्वाला आपल्या तंत्रशुद्ध फलंदाजीने मंत्र मुक्त केले.

त्यांच्या संघातील आगमनने भारतीय संघात एक वेगळाच आत्मविश्वास आला. तसेच भारतीय संघ अजून पर्यंत फलंदाजीत लिंबूटिंबू समजला जाणारा अचानक त्याच्याकडे प्रतिस्पर्धी संघाचा आदराने पाहण्याचा दृष्टिकोन आला आणि हा दृष्टिकोन व आत्मविश्वास पुढील पीढीतील क्रिकेटरसाठी फार महत्वाचा घटक राहिला . सुनील गावस्कर हे नांव संपूर्ण क्रिकेट विश्वात विशेषता भारतीय क्रिकेट इतिहासात सुवर्ण अक्षरात कायमचे कोरून ठेवले गेले आणि याची सुरुवात १९७१ च्या वेस्टइंडीज दौरा पासूनच झाली. १९७१च्या या विजयी श्रंखले नंतर खऱ्या अर्थाने भारतीयांचा क्रिकेटकडे पाहण्याचा दृष्टिकोन बदलला आणि क्रिकेट हा खेळ केवळ ठराविक लोकांपुरता न राहता गल्लोगल्ली सर्वसामान्यांपर्यंत पोहचला व तो 'सार्वजनिक' झाला आणि या पर्वाला १९७१ चा वेस्ट इंडिजच्या वरील ऐतिहासिक विजय कारणीभूत ठरला..!!!

१९७१ च्या दरम्यान या सर्व प्रतिकूल घटना भारतात होत असतानाच सांस्कृतिक विशेषतः चित्रपट क्षेत्राने मोठी उसळी मारली होती. त्याचा केंद्रबिंदू होता तो अभिनेता राजेश खन्ना . १९६८च्या 'आराधना' चित्रपटानंतर त्याची कारकीर्द सुसाट धावू लागली . १९७१ च्या दरम्यान त्याची कारकीर्द अती उच्च शिखरावर होती. याच वर्षीआलेला त्याचा 'हाथी मेरे साथी ' चित्रपट त्या वर्षाचा सर्वाधिक कमाई करणारा ठरला... राजेश खन्ना हे नांव तरुणांच्या विशेषतः तरूणींच्या गळ्यातील ताईत बनला होता.. सिनेसृष्टीतील या पहिल्यावहिल्या सुपरस्टारच्या आगमनाने सिने-सृष्टीला एक वेगळी झळाळी मिळाली...

त्यांच्या चित्रपटांने व गाण्यांनी त्या काळाचे वातावरण एकप्रकारे भारावून टाकले होते...'हंसते गाते जहाँ से गुजर, दुनिया की तू परवाह न कर ... ' अशा गाण्यांचा तरूण मनावर मोठा परिणाम झाला... त्यातच १९७१च साली देव आनंद यांच्या 'हरे रामा हरे कृष्णा' या चित्रपटाने पदार्पण केलेल्या जिनत अमान हिने 'अभिनेत्रीं' या शब्दाला नवीन परिभाषा दिली व इथूनच हिंदी चित्रपटांच्या हिरोईनला एक नवीन प्रकारचे ग्लॅमर रुप धारण झाले.. सर्वसामान्य तरुण-तरूणींमध्ये बेलबॉटम पॅन्टची आणि हिप्पी केसांची फॅशनची सुरुवात झाली ती या काळातच...

या सर्व परिस्थितीचा त्याकाळच्या तरूणमनावर चांगलाच परिणाम झाला होता आणि त्याचा सकारात्मक परिणाम त्यावेळच्या संपूर्ण वातावरणात दिसत होता..

१९७१ साली या सर्व सकारात्मक घटना घडत असतानाच याच वर्षाच्या शेवटच्या म्हणजे १९७१ च्या डिसेंबर महिन्यात जी घटना घडली ती सर्व भारतीयांसाठी अभिमानास्पद, गौरवास्पद आणि कायम स्मरणात राहील अशी घटना होती, ती म्हणजे १९७१ चे भारत-पाकिस्ताना यांच्यातील युद्ध आणि आपण मिळविले पाकिस्तान वरील तो ऐतिहासिक विजय. हि ऐतिहासिक घटना १९७१ मध्ये घडलेल्या सर्व घटनांची शिरोमणी ठरली....

या युद्धाचे महत्वाचे कारण तसे पाहिले तर पूर्व पाकिस्तान व पश्चिम पाकिस्तान यांच्यातील अंतर्गत धुमश्चक्री हे होय.. परंतु त्यांच्या या अंतर्गत धुमश्चक्रीत भारतीय सरकारी तिजोरीवर व भारतीय जनता यांच्यावर आलेल्या प्रचंड ताण व तणाव यामुळे भारताला नाईलाजाने या युद्धात सहभागी व्हावे लागले.

या युद्धात भारतीय जवानांनी पाकिस्तानी सैनिकांचा मुकाबला करत केवळ १३ दिवसांमध्ये पाकिस्तानी सैन्याला शरण यायला भाग पाडले व पूर्व पाकिस्तान आणि पश्चिम पाकिस्तान पासून वेगळा करून एक नवीन बांगलादेश या देशाची निर्मिती झाली . जगाच्या इतिहासातील सर्वांत छोट्या युद्धांमधील एक असा या युद्धाचा उल्लेख करण्यात आला. या तेरा दिवसांच्या युद्धातील 'शिख रेजिमेंट'ने लोंगोवाला परिसरातील एका रात्रीत कडवी झुंज देत पाकिस्तानी सैन्याचा व त्यांच्या युद्धटैंकचा पाडलेला फडशा व मिळवीलेला विजय हा या संपूर्ण युद्धाचा सर्वांत मोठ्या निर्णायक क्षणांपैकी एक ठरला...

भारतीय सैनिकांच्या या अद्वितीय कामगिरीचे प्रमुख शिलेदार होते ते भारतीय सैन्याचे सर्वेसर्वा माणेकशा आणि पंतप्रधान इंदिरा गांधी ....

भारतीय फौजेचे प्रमुख फिल्ड मार्शल जनरल माणेकशा यांच्या कल्पक युद्ध रचनेचा व पंतप्रधान इंदिरा गांधी आक्रमक परराष्ट्र धोरणाचा आणि कौशल्यपूर्ण राजनेतिकतेचा एकसंध परिणाम म्हणजे पाकिस्तान वरिल अविस्मरणीय विजय होय... या विजयामुळे संयुक्त पाकिस्तानची फाळणी व नव्या बांगलादेश देशाची निर्मिती झाली.

या सर्व घटनेंचा भारतीय जनतेवर विशेषतः तरुणांमध्ये एक नवासंचार व देशाभिमान निर्माण केला...या सर्व नवीन बदलांचा, नव भारताच्या जडणघडणीला १९७१ वर्षे समर्थ साक्षीदार होते. त्या घटनेंची साक्षीदार असलेली त्या काळातील तरूण पिढी आता वृद्धत्वाकडे झुकली असेल, परंतु १९७१ त्या सुवर्णकाळाची आठवण काढली असता त्यांचे मन त्या रम्य काळात नक्कीच रमत असेल... भारतीय स्वातंत्र्य नंतरच्या काळातील १९७१ हे वर्ष सर्वांगाने भारतीयांच्या प्रत्येक क्षेत्रातील अद्वितीय कामगिरीमुळे अविस्मरणीय ठरले. या सर्व घटनांची व १९७१ सालाची या वर्षी पन्नाशी पूर्ण होत आहे...

इतिहासच्या पाऊल खुणा काळाच्या ओघात धुसर होत असतील कदाचित, परंतु त्या कायमच्या कधीच मिटत नाही. गरज असते ती त्यावर जमलेल्या काळाची धुळ साफ करण्याची. कदाचित तेच काम १०-१५ वर्षा पूर्वी टिव्ही चैनलने केलेल्या सर्वेक्षणात त्यावेळी वयाच्या चाळीस-पंचेचाळीसच्या लोकांनी केले असावे आणि मला वाटतं त्याच प्रयत्नातच त्यांना १९७१ हेच अद्वितीय साल हे 'सुवर्णकाळ' म्हणून प्रकर्षाने नजरे समोर दिसले असेल...!!!

फेब्रुवारी-२०२१.

अनिल पी. मोहिते

सहायक आयुक्त

शांत हो जाता हूँ, कहते कहते,
विश्रांत हो जाता हूँ, चलते चलते,
आखिर किरदार जो हूँ।

मिट्टी था मैं उसके स्पर्श से पूर्व,
शून्य था उसके दिग्दर्शन से पूर्व,
अचेतन था उसके संसर्ग से पूर्व,
विचलित था उसके निर्देशन से पूर्व,
आखिर किरदार जो हूँ।

एक पूर्व निश्चित कथा का पात्र हूँ,
मैं उसके ही अणुओं का संघात हूँ,
उसके मानस का एक कल्पना मात्र हूँ,
आखिर किरदार जो हूँ।

ढालने का प्रयत्न करता हूँ,
स्वयं को अपने पात्र में,
प्रतीक्षित रहता हूँ उसके निर्देशन का,
प्रतिबिंबित करता हूँ उसे, अपने कृत्यों में
आखिर किरदार जो हूँ।

समझ नही पाता हूँ, इस रंगमंच को,
देख नही पाता हूँ , नेपथ्य में,
फिर भी नित्य सीखता हूँ अभिनय के गुर,
आखिर किरदार जो हूँ।

मुकेश मिश्रा
अधीक्षक

कुछ कह जाएँ....

दुनिया में आना जाना लगा रहता है लेकिन जिंदगी की आपाधापी में कई बार हम यह भूल जाते हैं कि हम नश्वर हैं। इन दिनों में इतने लोग गए हैं कि मन विव्हल हो उठा है। कलाम साहब, अटल जी, सुषमा जी समाज, राजनीति में कुछ ज़गह भरने को छोड़ गये। इस महामारी की वजह से कई अपने परिवार में शून्यता छोड़ गये। अब कलाकार साथ छोड़े जा रहे हैं। कहते हैं कि हम इस संसार में अभिनय करने आते हैं। किसी रंगमंच की कठपुतली की तरह जिसकी डोर कब, कहां, कैसे टूट जाए, कोई नहीं जानता । कोई अभिनेता या अभिनेत्री सामान्यतया किसी पात्र के माध्यम से कोई किस्सागोई करे तो वह अभिनय कहलाता है। संवाद, वाणी, शारीरिक चेष्टा, मुखमुद्रा, वेशभूषा और शब्दों को..... शब्दों के भावों से हम अपने नश्वर जीवन में रस की अनुभूति कराने का प्रयास करते हैं। लेकिन कई बार भ्रम होता है सपनों के टूटने का ।

इरफ़ान ने एक मूवी में कहा था कि जब आदमी का सपना टूट जाता है ना तो आदमी ख़त्म हो जाता है। लेकिन भ्रम होते रहना भी ज़रूरी है जो एक जीवित प्राणी में उसके विश्वास को बनाए रखता है क्योंकि सब कुछ के बाद आप तब तक अपने विश्वास की ताकत नहीं जान पाते जब तक कि उसकी परीक्षा ना हो जाए, फिर भी मन नहीं मानता । ऐसा लगता है कि सिर्फ इंसान गलत नहीं होते कभी वक़्त भी गलत कुछ कह जाएँ हो सकता है । अंततः पूरा का पूरा जीवन जाने देने का ही नाम है, लेकिन इस जीवनरूपी रंगमंच में बहुत से अपने, अपने अभिनय से बहुत कुछ सुना जाते हैं, कह जाते हैं, जता जाते हैं ।

मेरी एक स्वरचित कविता आपके साथ साझा कर रहा हूँ। कागज पर कुछ शब्द छूटे हैं । है तो बहुत ही साधारण सी कविता लेकिन फिर भी मेरे दिल के बहुत करीब है । क्यूंकि यह मुझे मेरे अपनों की याद दिलाती है ,वे अपने जो आज मेरे साथ नहीं हैं । लेकिन जो कुछ दे गये और बहुत कुछ ले गये ।

मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।
लेकिन उससे भी ज्यादा सुनना।
सुनना कुछ ऐसों को जो कुछ सुना जायें।
कुछ कह जायें।
कुछ जता जायें।
कुछ बता जायें।
कुछ छुपा जायें।
कुछ भिगा जायें।
कुछ निभा जायें।
कुछ जिता जायें।
कुछ हरा जायें।
कुछ चुरा जायें।
कुछ बचा जायें।
कुछ बिता जायें।
कुछ टिका जायें।
दूर उस पहाड़ी के पीछे तक
पहुँचा जायें
जहाँ से सूरज बिल्कुल साफ़ दिखता है।

श्रेयांश मोहन
30.04.2020
मुंबई

श्रेयांश मोहन,
उपायुक्त, सीमाशुल्क

कोविड – 19 : परीक्षा की घड़ी

मार्च, 2020 के बाद सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी की चपेट में आ गया था और कोई देश इससे अछूता नहीं रह गया। विश्व के कुछ देशों में कोविड-19 की दूसरी लहर और भी घातक सिद्ध हो चुकी है। इसके कुप्रभाव भारत में भी दिखने प्रारम्भ हो गए हैं। अभी तक विश्व के 189 देशों में लगभग 12 करोड़ से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं और लगभग 26.7 लाख से अधिक लोग इस महामारी के कारण काल के गाल में समा चुके हैं। चीन से आरंभ करते हुए इस महामारी ने विश्व युद्धों से भी ज्यादा नुकसान किया है।

सबसे अधिक बुरा प्रभाव संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, स्पेन, ब्रिटेन और ब्राज़ील पर पड़ा है। महाभारत का युद्ध लाखों योद्धाओं ने लड़ा था और यह युद्ध 18 दिनों में समाप्त हो गया था पर इस कोरोना महामारी से लड़ाई सम्पूर्ण विश्व लड़ रहा है। हर नागरिक एक योद्धा है। आज 135 करोड़ महारथियों के बलबूते हमें कोरोना के ख़िलाफ़ इस लड़ाई को जीतना है।

यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि कोरोना महामारी को कोविड-19 नाम इसीलिए दिया गया क्योंकि यह कोरोना महामारी की बीमारी सन 2019 में प्रारम्भ हुई थी। कोविड 19 का पूर्ण रूप "कोरोना वाइरस डिज़ीज- 2019" है। निश्चित तौर पर कोरोना के ख़िलाफ़ भारत की लड़ाई में जनता के योगदान को कोई नकार नहीं सकता, लेकिन इस लड़ाई के महारथी और सारथी का ज़िक्र करना भी ज़रूरी है।

कोरोना से युद्ध में प्रथम पंक्ति के योद्धा अपनी जान हथेली पर लेकर इस वाइरस से लड़ रहे हैं। ये योद्धा कोरोना वाइरस के संक्रमण को रोकने के लिए देश भर में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में अपने कार्यों में लगे चिकित्सकों, पैरामेडिकल कर्मियों, पुलिसकर्मियों, सफाईकर्मियों आदि को "कोरोना योद्धा" कहा जाता है. ये अपने प्राणों की तनिक भी परवाह न करते हुए कर्तव्यों को पूरा कर रहें हैं जिससे लोगों को संक्रमित होने से बचाया जा सके। दुख का विषय है कि कई चिकित्साकर्मी और पुलिसकर्मी संक्रमित होने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं। ये ही भारत के सच्चे कोरोना योद्धा हैं और इनके योगदान को भारतवासी कभी भुला नहीं सकते।

हमारे चिकित्सक एवं चिकित्साकर्मी कोरोना से युद्ध में प्रथम पंक्ति के योद्धा हैं। इन्होने कोरोना से युद्ध में उल्लेखनीय योगदान दिया है। चिकित्सक रोगियों की बढ़ती हुई संख्या के कारण अपने परिवार से मिलने नहीं जा पाते हैं और अस्पताल में ही थोड़ा विश्राम करके पुनः काम पर आ जाते हैं।

हर भारतवासी की सेवा करना ही इन्होने अपना धर्म माना है । नर्सों / परिचारिकाओं ने भी बहुत योगदान दिया है । कोविड परीक्षण प्रयोगशालाओं में जांच करने वाले भारत में डॉक्टरों की कमी है । 1000 लोगों पर एक डॉक्टर को विश्व स्वास्थ्य संगठन उचित मानता है, लेकिन भारत में डॉक्टर भी पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं । मास्क की कमी, व्यक्तिगत सुरक्षा किट (पी॰पी.ई॰ किट) की कमी, बेड की कमी, वेंटिलेटर की कमी के बावजूद किसी डॉक्टर ने इलाज करने से मना नहीं किया । कोरोना के ख़िलाफ़ भारत की इस लड़ाई में वो सभी डॉक्टर सबसे पहले सारथी हैं । इन डॉक्टरों के साथ पैरा मेडिकल स्टॉफ़ जैसे नर्स, लैब टेक्नीशियन आदि के काम को सराहा जा रहा है । कई अस्पतालों में बुनियादी सुविधाओं के अभाव में भी ये लगातार जनसेवा कर रहे हैं । भारत में विशेषज्ञों की टीम के साथ इस कोरोना वायरस का सामना किया जा रहा है । भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के महानिदेशक ने इस टीम की नुमाइंदगी की । इनकी टीम इस नई बीमारी से लड़ने के लिए नए रिसर्च में जुट गई । प्राइवेट लैब्स के साथ इन्होंने मिल कर काम किया और दो लैब्स को टेस्टिंग किट बनाने की अनुमति भी दी।

दुनिया के साथ-साथ अपने देश को भी कोरोनावायरस से फैली महामारी ने हिला कर रख दिया। लॉक डाउन के समय देश में सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल की स्थिति में था । आपदा की इस घड़ी में लाकडाउन से निपटने की भी चुनौती और देश की शान्ति व्यवस्था बनाये रखना पुलिस की अहम जिम्मेदारी हो गई। पुलिसकर्मी अपनी ज़िम्मेदारी बिना प्राणों की परवाह किए हुए तत्परता से निभाते रहे । इस विषम परिस्थिति में उपलब्ध सीमित संसाधनों से महामारी के समय आने वाली समस्याओं को पुलिसकर्मी मात देने में सफल रहे। इस महामारी से देश को बचाने के लिए सामाजिक -दूरी को महत्वपूर्ण बताया जा रहा है, जिसे लागू कराने की बड़ी जिम्मेदारी पुलिस विभाग की है । वह इसे भली भांति निभा भी रहा है ।चिकित्सा कर्मचारी जब संक्रमित व्यक्तियों को आइसोलेशन अथवा क्वारेंटाइन में डालते हैं तब उनकी सहायता पुलिस करती है. स्वास्थ्य कर्मचारियों के पास मानक रूप से सुरक्षात्मक वस्त्र होते हैं, परंतु पुलिस के पास ऐसा कुछ नहीं होता है. इसलिए पुलिस का कार्य ज्यादा खतरनाक होता है।

कोरोना योद्धाओं की श्रेणी में सफाईकर्मियों का योगदान सराहनीय रहा है । सड़क, बस्तियाँ, रेल्वे परिसर, कार्यालय परिसर को स्वच्छ रखकर इन योद्धाओं ने कोविड -19 महामारी का सामना करने के लिए नगरपालिकाओं के कर्मचारी बधाई के पात्र हैं । कोविड -19 महामारी को फैलने से रोकने के लिए संक्रमण की कड़ी को तोड़ना जरूरी होता है। इसीलिए सरकार ने लॉकडाउन लगाया था। बैंकिंग सेवाओं को लॉक डाउन के दौरान आवश्यक सेवाओं में शामिल किया गया । बैंक अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी होते हैं।

बैंक कर्मियों ने नियमित रूप से बैंक आकर ग्राहकों को सेवाएँ दीं। उन्हें नकदी की तंगी नहीं होने दी। ग्राहकों से संपर्क के कारण कई कर्मचारी संक्रमित हुए। हाल ही में भारतीय स्टेट बैंक ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए डोरस्टेप बैंकिंग की शुरुआत की है। यह अच्छी पहल है। अनिवार्य सेवा से जुड़े होने के नाते बैंककर्मियों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, जो हर बैंककर्मी बखूबी निभा रहा है।

हम सभी भारतवासियों ने कोविड -19 महामारी के दौरान आवश्यक सेवाओं की भूमिका को देखा और उनके महत्त्व को महसूस किया। चिकित्सा सेवाएँ, स्वास्थ-सेवाएँ, एंबुलेंस सेवाएँ, स्वच्छता सेवाएँ, पुलिस सेवाएँ, बैंकिंग सेवाएँ, पेट्रोल पंप, गैस एजेंसी ,डाकघर, आपदा प्रबंधन संस्थान, दूरसंचार, ब्रॉडकास्ट, इंटरनेट, केबल सेवा, ई कॉमर्स के जरिये दवाओं की आपूर्ति, प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया, राशन, डेयरी को आवश्यक सेवाओं की श्रेणी में रखा गया था। इन सभी सेवाओं के सुचारु रूप से संचालन के कारण ही जनता की काफी परेशानियाँ दूर हो गईं। आवश्यक सेवाओं में चिकित्सा सेवाएँ सबसे महत्वपूर्ण हैं। भारत में चिकित्सकों को भगवान का दर्जा दिया जाता है। वास्तव में यह सच होता दिखा। इस आपदा में डॉक्टरों और नर्सों ने मरीज़ो को परिवार जैसा मान लिया है लाकडाउन को प्रभावशाली तरीके से लागू करने एवं चिकित्सकों की सुरक्षा करने में पुलिसकर्मियों का योगदान सराहनीय है। निर्बाध रूप से राशन एवं डेयरी के सामानों की आपूर्ति को संबन्धित सरकारी विभागों ने सुनिश्चित किया। प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया जैसी आवश्यक सेवाओं ने जनता को कोविड -19 महामारी के बारे में जागरूक किया और अफवाहों को फैलने से रोका।

लगभग एक वर्ष बाद अब दुनिया में कोरोना का कहर दोबारा आरंभ हो चुका है। संतोष का विषय है कि अब विश्व में कोरोना का वैक्सीन आ चुका है। कई परीक्षणों के बाद भारत में भी कोरोना का टीका बन चुका है। भारत के सीरम इंस्टीट्यूट और ब्रिटिश दवा कंपनी एस्ट्राजेनेका के सहयोग से बनी कोवीशील्ड वैक्सीन और को -वैक्सीन जिसे भारत बायोटेक और आइसीएमआर ने बनाया है, काफी प्रसिद्ध हो रहे हैं। लाखों लोग इसे लगवा चुके हैं और अपने को कोरोना की बीमारी से सुरक्षित कर लिया है। भारत अपने वैकसीन को कई देशों में भी मित्रवत आवश्यक वितरण भी कर चुका है। सम्पूर्ण विश्व भारत के इस योगदान की प्रशंसा कर चुका है। इस प्रकार यह सुस्पष्ट है कि बिना अपनी सुरक्षा की परवाह करते हुए,कोविड-19 महामारी से निपटने में जुटे हमारे चिकित्साकर्मी, पुलिसकर्मी, सफाई कर्मी, बैंक कर्मी एवं आवश्यक-सेवाओं में लगे हुए हमारे वीर ‘‘कोरोना योद्धा’ हैं।

महामारी के खिलाफ लड़ाई में अद्भुत योगदान और बलिदान के लिए ‘‘कोरोना योद्धाओं’’ को हम नमन करते हैं। इनकी महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय भूमिका के ही कारण इन्हें “ भारत का गर्व” भी कहा जाता है। इनके बहुमूल्य योगदान के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र सदा कृतज्ञ रहेगा। स्वास्थ्य कर्मियों समेत अग्रिम मोर्चे पर तैनात कर्मियों का आभार व्यक्त करने के लिए भारत के विभिन्न शहरों में स्थित प्रमुख अस्पतालों के ऊपर सेना के हेलिकॉप्टरों द्वारा पुष्पवर्षा इनके साहस और मनोबल को बढ़ाने में सहायक हुआ है। लगभग 135 करोड़ की आबादी वाले भारत में कोरोना के मामले 114 लाख से अधिक और मृतकों की संख्या लगभग 1.59 लाख से अधिक है। रिकवरी दर भी अच्छी हो चुकी है। यह तुलनात्मकरूप से संतोषजनक है। हमें आत्मविश्वास के साथ महामारी का सामना करना है। हमें चुनौतियों को अवसर में बदलकर देश को कोरोना वायरस से मुक्त कराना है और स्वस्थ, समृद्ध तथा मजबूत भारत बनाकर दुनिया के समक्ष एक उदाहरण पेश करना है। ‘‘कोरोना योद्धाओं’’ के लिए निम्न पंक्तियाँ समर्पित हैं:

“जब सारी दुनियाँ जुटी है खुद की बचाने में जान,
जान पर खेल तब ये, दुश्मन की करें चाल नाकाम।
इनके हौसलों से ही जीतेंगे, कोरोना की ये भीषण जंग,
इन कोरोना योद्धाओं को हम, दिल से करते हैं नमन।”

रवीन्द्र कुमार द्विवेदी
अधीक्षक

Choose To Challenge...

Life is beautiful when she is in it,
She has the passion for life and the grit,
To live life in a balanced way,
And make the most out of each
and every day.
This is a beautiful occasion,
A day full of dialogue and contemplation,
I wonder if we as a united world,
Witness tranquil amongst genders
being unearthed.
And spread awareness to enable one another,
To become our best selves and love every gender.
Let's stand up and choose to challenge, .
And render our society free of ills and evils
With the passage of time,
We certainly are becoming a generation-oh so new!
I am proud woman,
Hope you are too.

.....By Prakriti Mishra

चुनें मुक़ाबले को.....

ज़िंदगी ख़ूबसूरत है गर वो उसमें हो तो
इक़ ज़ुनून है वो ज़िंदगी और सब्र का
वो बनाती है बेहतर ज़िंदगी जीने के लिए
दर रोज़ को और भी बेहतर
ये मौका भी ख़ूब है
बातों और सोच से भरा हुआ
दंग हूँ मैं गर हम जुड़ी क़ायनात होकर
खामोश गवाह बस हैं दबी आवाज़ों के
कोई मुहिम इक़ दूसरे को जगाने की
मजबूत करने की एकदूसरे को
आओ, कि मुकाबलों को खड़े हो जाएँ
करें आज़ाद सबको
बीमारियों और मुसीबतों से
वक़्त के इशारों से साथ
हम भी होंगे इक़ नई पीढ़ी
ओहह ! कितनी नई
मुझे फ़ख्र है औरत होने पर
उम्मीद है तुम्हें भी होगा

द्वारा... प्रकृति मिश्रा
पुत्री श्री राजेश कुमार मिश्रा,
आयुक्त, सीमाशुल्क

-: फाइलों के निपटान में हिन्दी का प्रयोग :-

हमें सरकारी कामकाज को निपटाने हेतु नियमों, उपबंधों, निर्देशों.. आदि का अनुपालन करना पड़ता है। लेख का विषय भी इसी परिधि में बंधा हुआ है। हम सब जानते हैं कि राजभाषा का प्रयोग सरकारी कामकाज में आवश्यक रूप से किया जाना है। यद्यपि हम अङ्ग्रेज़ी भाषा के जाल को अभी भी तोड़ नहीं पाये हैं और बहुत हल्के में इस बात को दोहराते हैं कि हमारा सरकारी सिस्टम तो अंग्रेजों की देन है इसलिए सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग तो पूरी तरह संभव नहीं है।

इस मिथ को तोड़ते हुये आज हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि कैसे हम बहुत ही आसान तरीके से हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए कार्यालय की फाइलों का कामकाज राजभाषा हिन्दी के माध्यम से निपटा सकते हैं।

जैसा कि हमे पता है कि फ़ाइल के दो भाग होते हैं : पहला टिप्पणी (Noting) भाग और दूसरा पत्राचार (Correspondence) का भाग। हमें राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करते हुए इन दोनों भागों का काम निपटाना होता है। कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु नीचे बताए जा रहे हैं जिससे संशय से भरा हुआ प्रत्येक कर्मचारी या अधिकारी अपने फ़ाइल के काम हिन्दी में निपटा सकता है।

1) फ़ाइल कवर पर "विभाग का नाम / Department of ....." में हमेशा अपने अनुभाग/डिविजन आदि का नाम पहले हिन्दी में उसके उपरांत अंग्रेज़ी में लिखें ।

2) कवर में विषय के स्थान पर हिन्दी में या द्विभाषी रूप से हिन्दी एवं अँग्रेजी में फ़ाइल का विषय लिखें। यदि फ़ाइल का विषय लिखने में संशय हो तो हिन्दी अनुभाग में तैनात अधिकारियों की सहायता प्राप्त करें। द्विभाषी विषय लिखने से फाइल की अलग पहचान होगी और फ़ाइल में कामकाज हिन्दी में करने का यह एक पहला कदम होगा।

3) फ़ाइल के टिप्पणी(Noting) भाग में हिन्दी भाषा में बहुत ही सरलता से टिप्पणियों को लिखा जा सकता है। इसमें कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना होगा :

   i) टिप्पणी में सरल हिन्दी का प्रयोग करें एवं तकनीकी शब्दो को लिप्यंतरण (Transliteration) के माध्यम से व्यक्त करें।

   ii) जिस उद्देश्य के लिए टिप्पणी लिखी जा रही है, उसे पूरी तरह से स्पष्ट करके लिखें। आपकी भाषा में किसी भी तरह के भ्रम की स्थिति न हो (To the point), अतः वह संक्षिप्त एवं सटीक (Precise) हो।

   iii) टिप्पणी में पहले उपलब्ध तथ्य/पत्राचार के बारे में लिखें, वह किस उद्देश्य के लिए लिखी जा रही है, उसके बारे में लिखें, उसके उपरांत संबन्धित नियम क्या है वह लिखें और अंत में टिप्पणी से संबन्धित आदेश हेतु उच्च अधिकारी को सादर प्रस्तुत करें।

उदाहरण : श्री कखग ने ब्रीफ़केस भत्ते की प्रतिपूर्ति (Reimbursement) हेतु आवेदन किया है और आपको उससे हिन्दी में संबन्धित टिप्पणी लिखनी है तो वह इस प्रकार होगी :

- प्रस्तुत प्रपत्र श्री कखग से प्राप्त ब्रीफ़केस भत्ते की प्रतिपूर्ति हेतु आवेदन है।
  (परिचय / About paper under consideration)
- श्री कखग ने इसमें स्वहस्ताक्षरित घोषणा की है कि उन्होने इससे पहले 03 वर्ष पूर्व संबन्धित ब्रीफकेस भत्ते की प्रतिपूर्ति हेतु आवेदन किया था। (तथ्य /Facts)
- केंद्र सरकार की नियमावली संख्या ..... के अनुसार एवं 03 वर्ष के उपरांत एवं उनके पद एवं वेतनमान के आधार पर श्री कखग नियमानुसार इस प्रतिपूर्ति के लिए पात्र है। श्री कखग की सेवापंजी प्रविष्टि से उनकी घोषणा का साक्षांकन कर लिया गया है।
- श्री कखग को ब्रीफकेस भत्ते की प्रतिपूर्ति हेतु रूपए ..... के अनुमोदन दिया जा सकता है।
  (नियम एवं पात्रता /Rules & Eligibility)
- फ़ाइल आगे के आदेश हेतु सादर प्रस्तुत है।
  (प्रस्तुति / Submission)

टिप्पणी लिखने के उपरांत बाई ओर अपने हिन्दी में हस्ताक्षर के साथ पूरा नाम एवं पदनाम अवश्य लिखें एवं उच्च अधिकारी को उसके हिन्दी पदनाम के साथ फ़ाइल आगे बढ़ाए।

4) पत्राचार भाग में यदि कोई धारा 3(3) का कागजात तैयार किया जा रहा हो तो वह आवश्यक रूप से द्विभाषी होना चाहिए। इस संबंध में हिन्दी अनुभाग से सहायता प्राप्त की जानी चाहिए। धारा 3(3) के कागजात हैं – 'परिपत्र , अधिसूचना, रिपोर्ट, सामान्य आदेश, नोटिस, ज्ञापन, अनुज्ञप्ति आदि।

5) कार्यालय के फ़ाइल कवर में अंदर की ओर अधिकारियों और सहायक हेतु छोटी छोटी टिप्पणियाँ अंकित होती हैं , वह हिन्दी में कार्य करने के लिए बहुत उपयोगी हैं।

6) बार बार प्रयोग में लाये जाने वाले शब्दों एवं उनकी हिन्दी को अलग से कहीं नोट करके रखना चाहिए एवं उनका समय समय पर प्रयोग करना चाहिए।

7) यह अपेक्षा की जाती है कि सहायक नेमी प्रवृत्ति (Routine type) की टिप्पणियों को बार बार प्रयोग में लाकर फाइलों में हिन्दी के कार्यों को बढ़ावा दें।

अतः उक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर हिन्दी के राजभाषा स्वरूप को चरितार्थ किया जा सकता है अर्थात वह भाषा जिसमें सरकारी काम काज किया जा सके, वह राजभाषा है। सतत प्रयास से हिन्दी में फ़ाइल कार्य सरल हो जाता है और इससे ऊपर के अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों को हिन्दी में फ़ाइल कार्य सम्पन्न करने की प्रेरणा मिलेगी।

- रूपेश एस सक्सेना,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

-: राजभाषा दिशानिर्देश / OFFICIAL LANGUAGE GUIDELINES :-

राजभाषा नीति के अंतर्गत निम्नलिखित मद द्विभाषी रुप में होने चाहिए।

FOLLOWING ITEMS SHOULD BE IN BILINGUAL FORM UNDER THE OFFICIAL LANGUAGE POLICY

1. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले कागजात
   Documents under Section 3 (3) of O.L. Act 1963

   (संकल्प/Resolutions, नियम/Rules, सामान्य आदेश/General Orders* अधिसूचनाएं/Notifications, रिपोर्ट/Report, प्रेस विज्ञप्ति/Press Communique, संविदाएं/Contracts, करार/Agreements, अनुज्ञप्तियाँ/Licences, परमिट/Permit निविदा/Tender, संसद के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले प्रपत्र /प्रतिवेदन/Officials Papers, Other Reports laid before Parliament)

   *आदेश/Order, परिपत्र/Circulars, अनुदेश/Instruction, ज्ञापन/Memorandum, नोटिस/Notice,

2. रबड़ की मोहरें Rubber Stamps,
   नामपट्ट Nameplates,
   पत्र शीर्ष Letter Head

3. फाइलों के शीर्षक Titles of Files
   कार्यालयीन फॉर्म Official Form
   फाइलों में टिप्पणी, हस्ताक्षर(हिन्दी में)
   Noting & Signature in Files (in Hindi)

4. नेमी पत्राचार
   Routine Correspondence

कम्प्युटरों में यूनिकोड आधारित हिन्दी टंकण की सुविधा
Unicode based Hindi Typing facility in Computers

हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा
Letters received in Hindi shall be replied to in Hindi

: लेखा वेतन बिल अनुभाग / A/Cs PAY BILL SECTION :

- राजभाषा कार्यान्वयन दिशानिर्देश-

- OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION GUIDELINES -

राजभाषा नियम 1976, नियम संख्या-11

निम्नलिखित मदों को अनिवार्य रुप से व्दिभाषी रुप मे होने चाहिए!

FOLLOWING ITEMS SHOULD BE IN BILINGUAL FORM COMPULSORILY

******

सेवा पुस्तिका (Service Book)

शीर्षक, जीवनवृन्त, प्रविष्टियां, टिप्पणी, अभ्युक्तियाँ

Titles, Bio Data, Entries, Noting, Remarks

(हिन्दी को समान फॉन्ट आकार के साथ अंग्रेजी से ऊपर या आगे रखा जायगा)

(Hindi will be Placed above or ahead of English with the same font size)

सेवा पुस्तिकाओं में टिप्पणियों हेतु व्दिभाषी रबड़ मुहरों का प्रयोग

USE OF BILINGUAL RUBBER STAMPS FOR NOTINGS IN SERVICE BOOKS

कार्यालय रजिस्टर (Office Registers)

शीर्षक, प्रारुप एवं प्रविष्टि अनिवार्यत: व्दिभाषी रुप में की जाये

TITLES, PROFORMA AND ENTRIES MUST BE MADE IN BILINGUAL

अन्य महत्वपूर्ण निर्देश (Other Important Instructions)

नेमी प्रवृत्ति के प्रारुप, नेमी पत्र, स्टेशनरी सामग्री, नाम पट्टिका आवश्यक रुप से व्दिभाषी होना चाहिये

ROUTINE FORMS, ROUTINE LETTERS, STATIONERY ITEMS, NAME PLATES MUST BE BILINGUAL.

विभागीय गतिविधियाँ

कंटेनर स्कैनिंग डिवीजन (सी.जी.डी.) – एक रिपोर्ट

दिनांक 30.03.2021 को जे.एन.पी.सी.टी. एवं दिनांक 25.06.2021 ए.एन.पी.टी. और एन.एस.आई.सी.टी. में नवीन मोबाइल एक्स-रे स्कैनर्स प्रयोग हेतु लगाए गए हैं, जिनका प्रयोग भी आरंभ हो चुका है । यह आशा की जाती है कि सीमाशुल्क न्हावा शेवा के अग्रणी कार्यक्रम डीपीडी में यह सुविधा महत्वपूर्ण वृद्धि करेगी।

ये एक्स-रे स्कैनर्स व्यापार सुविधाओं में वृद्धि की दिशा में सहायक हैं। इनमें कंटेनरों की आवाजाही में लगने वाले समय (ड्वेल टाइम) को कम करता है। ये एक्स-रे स्कैनर्स सभी सूचनाओं को ICES के साथ साझा करता है।

इस प्रक्रिया में EIR दस्तावेज़ की आवश्यकता नही होती है। अब कंटेनर को टर्मिनल के अंदर ही स्कैन स्कैन किया जा सकता है और बिना किसी अतिरिक्त व्यवस्थाओं के उसकी निकासी भी की जा सकती है । ये सुविधा 'संपर्क रहित सीमाशुल्क (Contactless Customs)' को सुनिश्चित करती है। ये सुविधाएं 24 x 7 के लिए उपलब्ध हैं ।

इस अवसर पर आजादी के अमृत महोत्सव अभियान कार्यक्रमों के अंतर्गत वृहत पौधरोपण किया गया।

एक कविता.....

वो, जो कहते हैं खुद को,
मेरा हितैषी
आते हैं मेरा हाल पूछते हैं
मेरे घावों को सहलाते हैं.....।
मेरा घाव, जो भरा भी नहीं, कि
वो फिर आते हैं
उन घावों को सहलाते हैं
मेरा हाल पूछते हैं।
मैं शुक्रगुज़ार हूँ.....।
उनका आना
मेरे घावों को सहलाना
मेरा हाल पूछना,
मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि मैं ज़िन्दा हूँ
मेरा घाव भी ज़िन्दा है
और ज़िन्दा है उनका आना
मेरे घावों को सहलाना
मेरा हाल पूछना
हर बार सूंघना
कि कहीं वो घाव भर तो नहीं गया।

अवधेश कुमार,
अधीक्षक

डूडल

आपको याद होगा बचपन में जब कक्षा से ऊब आ जाती थी; तब कॉपी के आखरी पन्नों पर जो भी चित्र आप बनाते थे, उसे "डूडल" कहते हैं। विश्वास मानिए जो प्रश्न आपके मन में आया है, वह संपादकीय महोदय पूंछ चुके हैं। इस लेख पर छपे चित्र बाधा रहित व्यक्तिगत क्षणों में ही बनाए गए हैं, दफ्तर में नहीं। डूडलिंग एक भाव के साथ चालू होती है जो आपके हृदय को छू गई हो। जो भी सामने प्रकट होता है वह कुछ भाव , कुछ हकीकत, कुछ कल्पना, और कुछ पुरानी याद का सम्मिश्रण होता है। आपके सामने मेरे कुछ डूडल्स प्रस्तुत हैं –

आशीष कुमार गुप्ता,
निरीक्षक

(श्री के. एम. बिनोय, अधीक्षक, सीमाशुल्क के आकस्मिक निधन पर उन्हें समर्पित)

किसी दोस्त को कहकर जाओ
ये कैसी नफ़रत है
अपनों से ,
तुम हमें में से हो
और हम भी तुमसे है
क्यों ऐसी गफ़लत है
कुछ है कुछ नहीं है
कोई जानलेवा है
कौन जानलेवा है
क्यों जानलेवा है
तुम क्यों जड़ हुए
कुछ तो कहकर जाओ
दोस्त से तो कहकर जाओ
एक छत के नीचे
क्यों हृदय इतना तेरा रूठ गया
महक तक पहचानते है
अपनों से क्यों छूट गया
क्या कोई भी ऐसा नहीं
जिसपर तुमको भरोसा नहीं
ये जख्म है भरेगा नहीं
थोड़ा और सह कर जाते
किसी दोस्त को कुछ तो कह कर जाते

प्रतीक्षा करो..

तरुण हुए बहुत तरुण
वरुण हुए बहुत वरुण
अब मस्तक सीधा रखो
चाल सीधी रखो
असंतुलन अब अपेक्षित नही
कोई भी जिज्ञासा न रहे
पंक्तिबद्ध रहो
अनभिज्ञ रहो
नई संज्ञा न सजाओ
कमतर ही रहो
तैयार रहो औचक अवसरों को
अकेले ही साथ रहो
रोचक क्रंदन हो या हास्य
शोभा नही देंगे
अभी उपेक्षित हो तुम
तुम्हारा अभीष्ट अपेक्षित है
प्रतीक्षा करो..

रवि रौशन अधीक्षक

बच्चों के लिए कोडिंग क्या है ?

बच्चों के लिए कोडिंग, कोडिंग में शामिल बच्चों के लिए सुनहरा अवसर है या यूं कहिए कि अवसरों का एक समूह है। जो जैसी दिशा पकड़ना चाहे पकड़ सकता है, वह अपना स्वयं का और दूसरों का भी करियर बना सकता है। ये सभी अवसर बच्चों के मस्तिष्क को मजेदार और एक खेल जैसे वातावरण में आगे बढ़ाते हैं। यह मुश्किल होता है कि किसी परिपक्व मस्तिष्क को इस प्रकार की चीजें सिखाई जा सके। बच्चे इसके लिए उपयुक्त हैं और कोडिंग इन बच्चों के लिए वास्तविकता है जबकि परिपक्व लोगों के लिए कल्पनाशीलता।

कोडिंग कम्प्यूटर से बात करने के लिए जरूरी है और इसी कोडिंग से हम वैबसाइट, एप्स और गेम्स इत्यादि बनाते हैं । ये कोडिंग वर्तमान पीढ़ी के जवान होते बच्चों के लिए न केवल रोजगार का साधन बनती है बल्कि ये उनकी सोच, मानसिकता, सृजन, और निर्माण जैसे क्षेत्रों में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हुए उनके कौशल के विकास में भी सहायक होती है। बच्चों को कोडिंग इसीलिए सीखनी चाहिए:

- कोडर्स की भारी मांग है
- कोडिंग एक प्रतिस्पर्धी वातावरण और लाभ देती है
- कोडिंग दुनिया को समझने के ठीक से समझने में सहायक है
- कोडिंग मजेदार और संतुष्टिदायक है
- कोडिंग रचनात्मकता में वृद्धि करती है
- समस्याओं के हल करने की और सहयोग की क्षमता बढ़ाती है

किन्तु इन सबके साथ सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए, यदि आप कोडिंग सीखने के इच्छुक हैं तो ही आप इसे सीख पाते हैं या कर पाते हैं। अगर आपकी रुचि इसमें नही है तो प्रयास व्यर्थ हैं। कोडिंग मन की स्वाभाविक कल्पनाशीलता को परिणाम देता है। कोडिंग सीखने की प्रक्रिया में अन्य महत्वपूर्ण बातों को याद रखना चाहिए जैसे कि तकनीक का ज्ञान, किसी खेल या व्यवस्था को आगे बढ़ाने के नए रास्तों की संभावना, 3D प्रिंटिंग या कोई वीडियो का निर्माण। इन सबके अलावा फोटोग्राफी के शौक के साथ भी इसमें करियर बनाया जा सकता है। इस दिशा में आगे जाने पर मार्केटिंग, सलाहकार और प्रचार विज्ञापन इत्यादि के क्षेत्र में भी करियर बनाया जा सकता है। कोडिंग किसी आइडिया को साकार करने का नाम है इसीलिए इसकी सहायता से आप नेतृत्व क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं जब आप अपनी कोडिंग के माध्यम से दूसरों से बेहतर उत्पाद तैयार कर सकें। कोडिंग आपको बहुत दूर तक ले जाती है। जितना आपके मन के घोड़े दौड़ सकते हैं कोडिंग भी वहाँ तक जा सकती है।

किसी अन्य प्रक्रिया की तरह कोडिंग भी एक प्रक्रिया है जिसे लगन और मेहनत से सीखा जा सकता है। स्थिरता और उत्साह का निरंतर बने रहना आवश्यक है। कोडिंग की प्रक्रिया में आप अपने सवालों के जवाब खुद ढूंढ लेते हैं या फिर नए जवाब बना भी सकते हैं। किसी की व्यापारिक व्यावसायिक मांग के अनुसार भी कोडिंग कर आवश्यक उत्पाद बनाया जा सकता है । वैब डिज़ाइनर नाम का कार्य पहले ज्यादा प्रचलित नही था किन्तु अप लगभग हर कंपनी/संस्थान/संस्था आज अपनी वैबसाइट रखना चाहती है जिससे कि उसका डिजिटल तकनीकी उपयोग कर वे सभी अपने कार्यों को आगे बढ़ा सके। कई देशों में ऐसे उदाहरण सामने आये हैं जिसमें बच्चों ने सामान्य ट्रैफिक नियमों, आवश्यक स्वास्थ्य सूचनाओं , नैविगेशन, मनोरंजन के क्षेत्र में कोडिंग करके एप्स और वैबसाइट बनाई हैं। ऐसे उदाहरण हमारे देश में भए मिलना आरंभ हो गए हैं। ये तकनीक समय के साथ और भी आगे बढ़ती जाएगी । जितना समय आप इसे देंगे आप इसके मास्टर होते जाएँगे ।

बच्चों को कोडिंग के लिए कैसे प्रेरित करें या उनके लिए कहाँ कैसी व्यवस्थाएं है ये आपको ऑनलाइन कोडिंग क्लासेस से भी पता चल जाएगा जहां आप व्यक्तिगत अनुभव भी ले सकते हैं ।।

योगेंद्र सिंह
मूल्य निरूपक

मेरा गाँव....

राह कभी तो भटकूँ मैं,

कभी तो ऐसी बाट मिले

पक्के रस्तों पर पाँव घिसे

कुछ पगडंडी कुछ घास मिले

बाशिंदों की बस्ती में बस सूरज आता जाता है

पैरों की आपाधापी को दो पल का आराम मिले

कहीं पास छिड़ी हो मेंढक की टर्र टर्र

कहीं दूर सियार की तान छिड़े

कोई जुगनू कंधों पर आ बैठे

कहकशों में ऐसी शाम मिले

बचपन वाली मनमानी हो

पास में बूढ़ी नानी हो

जिसमें परियों की रानी थी

फिर वही पुरानी कहानी हो

थकी उनींदी पलकों को बूढ़े हाथों की छाप मिले

किसी रोज उस राह चलूँ जिस पर बचपन आबाद मिले

अजीत कुमार पाण्डेय

कर सहायक

‘ कम्फर्ट जोन ’

सबको यह पता है कि चर्चा दो या दो से अधिक लोगो के बीच होती है, किन्तु शीर्षक के अनुसार आज मैं अपने आप से अकेले ही चर्चा कर रहा हूँ, जिसमें विषय हैं- ‘कम्फर्ट जोन’ । मैंने बहुत कोशिश की इस अवधारणा हिन्दी में लिखने की, शब्द भी मिले । उनमें से एक जो सबसे करीब था, वह है “सुखद क्षेत्र” । यह वह जोन या क्षेत्र है जिसे हम अपने चारो ओर खींच लेते हैं और वह ज़्यादातर सीमित होता है । उस सँकरे दायरे में होती हैं हमारी आदतें, हमारी पसंद, नापसंद, हमारे सोचने और काम करने का तरीका इत्यादि । यह कम्फर्ट जोन या दायरा हमारे मन मस्तिष्क में इतना कसा होता है कि हम बिना किसी की परवाह किए हुए, बिना उसके सीमित परिणाम की चिंता किए हुये उससे बाहर आने के बारे में सोचते तक नहीं और पूरा जीवन उसी दायरे में बिता देते हैं या यूं कहें कि हम किसी भी प्रकार के परिवर्तन को स्वीकार नहीं कर सकते। हमें लगता हैं कि इस कम्फर्ट जोन या एक नकली ‘सुखद क्षेत्र’ में हम बहुत सुरक्षित हैं ।

सोचा जरा इंटरनेट में विकिपीडिया को देखते हैं कि वो क्या कहता है ‘कम्फर्ट जोन’ के बारे में । जैसे ही गूगल में ‘कम्फर्ट जोन’ शब्द डाला, चेहरे में मुस्कान दौड़ गई, वहाँ पर मैप एवं पते के साथ नवी मुंबई में स्थित ‘कम्फर्ट जोन होटल’ एवं ‘कम्फर्ट जोन रेडीमेड गारमेंट’ की दुकानों के पते आ गए । खैर उसके उपरांत एक अच्छी सी परिभाषा भी आई “एक ऐसा मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक एवं व्यावहारिकता पूर्ण ढांचा जिसमें आपके चित परिचित लोग, आपकी सबसे करीब की भावनाएं, आपकी रोजमर्या की आदतें रहती हैं और जिसमें रिस्क और स्ट्रैस न के बराबर हो” ।

दोस्तो, अब मेरे मन में यह सवाल आ रहा था कि इस दुनिया में ज़्यादातर लोगो के मन में यह ‘कम्फर्ट जोन’ होता है, मेरे मन में भी यह अदृश्य सा ‘कम्फर्ट जोन’ है तो क्या यह एक गलत अवधारणा है या सही अवधारणा है। इस पर कई जानकारों की राय पढ़ी, इंटरनेट में यूट्यूब की भी खूब यात्रा की, परंतु अभी भी असमंजस की स्थिति थी कि क्या यह ‘कम्फर्ट जोन’ खराब स्थिति है या सामान्य सी बात है या गलत अवधारणा है हर इंसान के लिए । अंततः इंटरनेट देवता के माध्यम से एक मजेदार बात हाथ लगी जिससे सबकुछ स्पष्ट हो गया । उसमें लिखा था ‘ऊपर वाला जब भी देता है, छप्पर फाड़ कर देता

है' लेकिन जब आपका छप्पर ही छोटा है तो बेचारा ईश्वर भी क्या करे अर्थात जब आपकी सोच ही छोटी होगी या आप बदलाव ही नहीं करना चाहेंगे तो आपकी प्रगति कैसे होगी। आप या तो आलसी हो जाते हैं या 'लोग क्या कहेंगे' या 'क्या मुझे यह ठीक लगेगा' जैसे नकारात्मक कुचक्रों में फंस जाते हैं। कभी कभी आप अपनी गलत सोच को भी अपने 'कम्फर्ट जोन' का हिस्सा बना लेते हैं। मुझे याद है जब मैं छोटा था तो मेरे पिताजी ने घर में फोन लगवाने के लिए हमेशा मना कर देते थे क्योकि उस समय उनका मानना था कि जब भी इसकी घंटी बजती है तो कोई न कोई मुसीबत ही आती है, लोग तुरंत अपनी समस्याएं बोल देते हैं, या दूसरों को टेंशन देते हैं। विश्वास कीजिये उन्हें आज 30 साल बाद भी उन्हें फोन से चिढ़ हैं। शायद बेचारे फोन के अस्तित्व पर विश्वास न करना उनका 'कम्फर्ट जोन' हैं।

चलिये इस पर भी प्रकाश डाला जाये कि इस 'कम्फर्ट जोन' में बने रहने के परिणाम क्या होते हैं और उसके उपरांत उनके निवारण क्या हो सकते हैं। आपने सुना होगा कि 'नो रिस्क नो रिवार्ड' अर्थात सीधे तौर पर आप अपने मन में 'असहज' होने के दायरे को बढ़ा रहे हैं। आपको छोटे छोटे बदलाव, अपनी क्षमताओं के अनुरूप आगे बढ़ने में तुरंत असहज होना छोड़ना होगा, नहीं तो आप पिछड़ जाएँगे। हमें असहज स्थिति में सहज रहना सीखना होगा। दूसरा परिणाम जो ज्यादा हानिकारक है कि 'कम्फर्ट जोन' में रहने के कारण आप जीवन में कई 'अवसरों' को गवां सकते हैं और सब जानते हैं मौके बार-बार नहीं आते। इस प्रकार आप अपने 'कम्फर्ट जोन' के दायरे को और बढ़ा देंगे जो उचित नहीं है।` यह 'कम्फर्ट जोन' आपके अंदर अवसाद अर्थात डिप्रेशन की स्थिति पैदा कर सकता है क्योकि आप सब के साथ नहीं चल पा रहे हो, संभवतः इससे अकेलापन हावी हो जाता है। 'जूडिथ बार्डविक' नाम के लेखक ने अपनी किताब "डेंजर इन कम्फर्ट जोन" में लिखा है कि हमारा मस्तिष्क आलसी होता है और वह हमेशा आसान रास्ते की ओर ही मुड़ता है। हम या तो जीवन को 'ऑटो-पायलेट' मोड में डालकर उड़ते रहें या नई चुनौतियों को स्वीकार करते हुए, कठिन रास्तों में आगे बढ़ें और बेहतर जीवन को चुनें। 'कम्फर्ट जोन' में हम अपनी क्षमताओं, सोच, कार्यशैली के 'बेंचमार्क' बना लेते हैं। हमें उन बेंचमार्क को कम्फर्ट जोन से लर्निंग जोन की ओर खींचना होगा। मैंने अपने कार्यालय में एक मित्र से इस विषय पर चर्चा की तो उन्होने दर्शाया कि उन्हे अपने 'कम्फर्ट जोन' पर गर्व हैं क्योकि इसमें उन्हे आत्मसंतुष्टि महसूस होती है, पर उनकी आदत है कि वह किसी उच्च लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ते हैं किन्तु दूसरों पर

अधिक निर्भरता के कारण वह आधे रास्ते में ही स्ट्रैस में आ जाते हैं और चुपचाप वह पुनः अपने 'कम्फर्ट जोन' में नीचे खिसक जाते हैं। उनके लिए बस वह उच्च लक्ष्य के विषय में मात्र सोचना ही आत्मसंतुष्टि थी। मेरा 'कम्फर्ट जोन' है कि खुद की सोच पर सारा कार्य अकेले ही निपटाना, मैंने बहुत प्रयास किए कि इस आदत से उबर जाऊ क्योकि इससे कार्यों में परिणाम कम, मेहनत ज्यादा लगती है। मैंने अब जाना कि कार्यों को विकेंद्रीकरण आवश्यक है।

अगर आप अपने 'कम्फर्ट जोन' को तोड़ कर कुछ नया सोचना हैं तो आवश्यक रूप से आपको टालने की आदत छोइनी होगी, नए मित्रों को जीवन में शामिल करना होगा, पुरानी के बजाए नई-नई जगहों में जाने की आदत डालनी होगी, अपनी गलतियों को स्वीकार करना होगा ताकि सुधार किया जा सके, निर्णय लेने में बहुत ज्यादा समय कभी नहीं लगाना चाहिए एवं 'कम्फर्ट जोन' से बाहर निकल कर बिना अंतर्मुखी बने दूसरों के अनुभवों पर भी विचार करना चाहिए।

"अपने 'कम्फर्ट जोन' से बाहर निकलिए, आप तभी ग्रो
कर सकते हैं जब आप कुछ नया ट्राई करने में अजीब और
असहज मसूस करने को तैयार हों"

-ब्राइन ट्रेसी

रूपेश शंकर सक्सेना
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

शहीद यहाँ पर हर कोई भारत माँ का बेटा है
आओ मिलकर नमन करें जो लिपट तिरंगा लेटा है
किसी की आँख का तारा था तो किसी के चेहरे का था नूर
किसी के सर का साया था वो किसी की मांग का सिंदूर
कोई यहाँ अनाथ हुआ तो कोई हुआ था चकनाचूर
फिर भी देते रहे बेटे अपनी कुर्बानी भरपूर
आवाज़ सुन गलियारों की शहीदों के परिवारों की
रुदन यहाँ पर बरस रहा माँ मूर्छित है बेचारों की
बीवी को न सुध रही बाप बना है पत्थर सा
छोटे बच्चे बिलख रहे हैं लिपट के सीना पापा का
भाई का अपने जो हाथ रहा उखड़ गया वो कांधे से
दुख का सैलाब टूट पड़ा है न रुकता वो बांधे से
बिखर गई रंगीन सी राखी उसकी प्यारी बहना की
घर से उसके उजड़ गई है रंगत सब त्योहारों की
फिर भी बेटा जाता है उसका भारत माँ की सेवा को
सलाम है उसके ज़ज़्बे को जो देश की सेवा करता है
बस बहुत हो चुका ये खूनी खेल अब न भारत सह पाएगा
दुश्मनों की हर हरकत का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा
न लिपटेगा तिरंगे से सैनिक उसे बस फहराया जाएगा
ऊंची आवाज़ में वंदे मातरम भी गाया जाएगा
दर्द को अपने भारत माँ ने सीने में समेटा है
आओ मिलकर नमन करें जो लिपट तिरंगा लेटा है
आओ मिलकर नमन करें जो लिपट तिरंगा लेटा है

अवनीश यादव
निरीक्षक

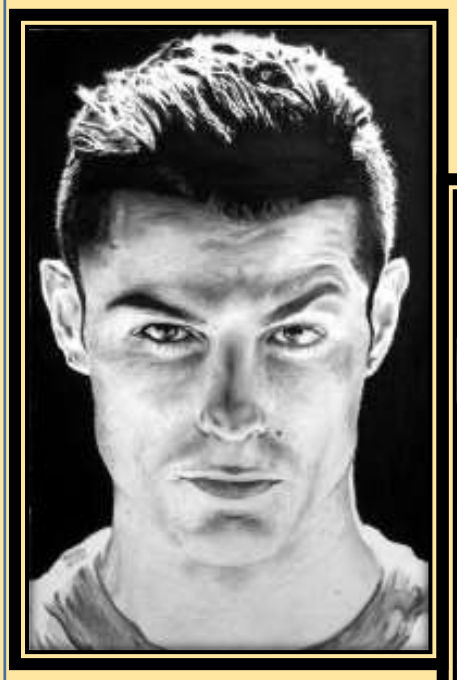

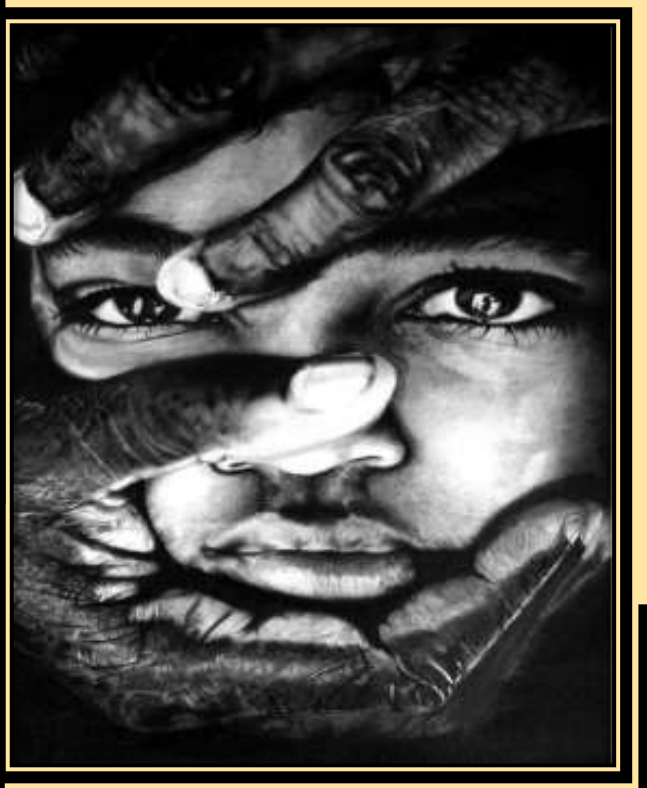

अमेश सुनील डावरे (आयु 17 वर्ष), पुत्र सुश्री ज्योति डावरे, मूल्यनिरूपक द्वारा निर्मित कुछ पेंसिल स्केच

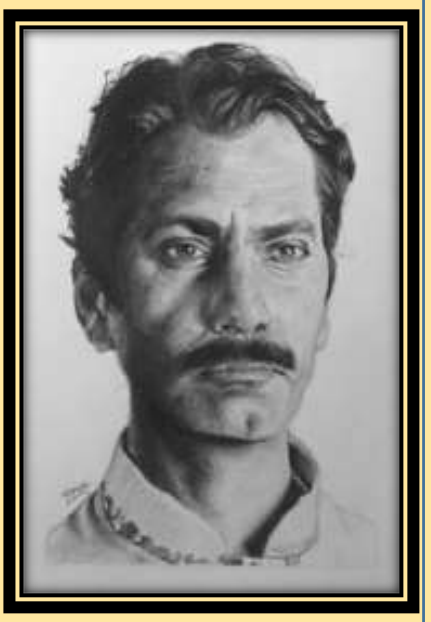

स्वच्छता पखवाड़ा (16 से 31 अगस्त, 2021)

शपथ ग्रहण करते हुए अधिकारी गण

स्वच्छता पखवाड़ा (16 से 31 अगस्त, 2021)

कार्यालय परिसर की साफ सफाई एवं
स्वच्छता पर कार्यशाला का आयोजन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिन्दी पखवाड़ा – 2021 समारोह

14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' के अवसर पर वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में राजभाषा प्रतिज्ञा समारोह एवं अन्य प्रतियोगिताओं के आयोजन

बेटी बचाओ बेटी पढाओ .. बेटा शिक्षित तो बेटी सुरक्षित

इस पृथ्वी पर मानव जाति के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए महिला एवं पुरुष दोनों का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। आज के दौर में हम यह कहाँ सोच पाते हैं कि बेटा बेटी एक समान होते हैं और यदि हम यह सोचने की कोशिश भी करते हैं तो यह सामाजिक लोग हमें सोचने का मौका ही नही देते। एक ओर समाज यह कहता है ' बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' वहीं दूसरी ओर यही समाज अपनी विचारधारा प्रकट करता है कि 'तू परेशान मत हो बेटा भी देगा भगवान' पर क्या वह पिता जिसने अपनी बेटी को जन्म दिया है वह खुश नही है? नही- वह तो बहुत खुश है लेकिन उसके मन में यह बात घर कर लेती है कि कल जब मेरी बेटी पढ़ने के लिए स्कूल या कॉलेज जाएगी तो क्या वह खुद को सुरक्षित महसूस करेगी ? आज के समय में बेटियों को अगर सुरक्षित रखना है तो हमें अपनी बेटों को शिक्षित और सभ्य समाज का हिस्सा बनाना ही होगा, क्योंकि आज जिस बेटी ने जन्म लिया है उसे कल इस समाज से नही बल्कि समाज में रहने वाले उन पुरुषों से खतरा है जो नारी सम्मान नही जानते। बेटी अगर आज डॉक्टर बन जाती है तो रात के अंधेरे में ज़िंदा जला दी जाती है, घूमने फिरने जाती है तो बलात्कार कर सड़क पर फेंक दी जाती है, पढ़ने जाती है तो कुछ अशिक्षित उच्छृंखल लड़कों का शिकार होकर या तो तेजाब से जला दी जाती है नही तो उनके डर से घर पर बैठ जाती है या ख़ुदकुशी कर लेती है। ऐसे अपराधों में दोषी पीड़ित की आयु तक का ध्यान नही रख पाता है। छोटी नवजात बच्चियों से लेकर उम्रदराज महिलाओं तक कोई भी सुरक्षित नही है। एक पूरी प्रजाति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं ये अशिक्षित पुरुष। आप ही सोचिए कि क्या सिर्फ बेटों को शिक्षित करना आवश्यक है या बेटियों को भी पर्याप्त शिक्षित करना आवश्यक है जिससे कि वे एक दूसरे का समुचित सम्मान कर सकें। आज से ही और अभी से ही हम सभी को अपनी सोच में परिवर्तन लाने और ठोस कदम उठाने की जरूरत है ताकि भविष्य में बेटियों को और भी अधिक शिक्षित और मजबूत बनाया जा सके।

यह हम सभी का सामूहिक नैतिक उत्तरदायित्व भी है। यही सच्ची राष्ट्र सेवा है।

जगमोहन,आशुलिपिक

सचिन गुप्ते, सहायक आयुक्त के कैमरे की नज़र से ..

विवरण (बाएं से दाएं) : 1.रूडी शेल्डक 2. कॉर्मरन्ट 3. सैन्ड्पाइपर 4. फ्लेमिंगोस 5. फ्लेमिंगोस 6. स्टिल्ट

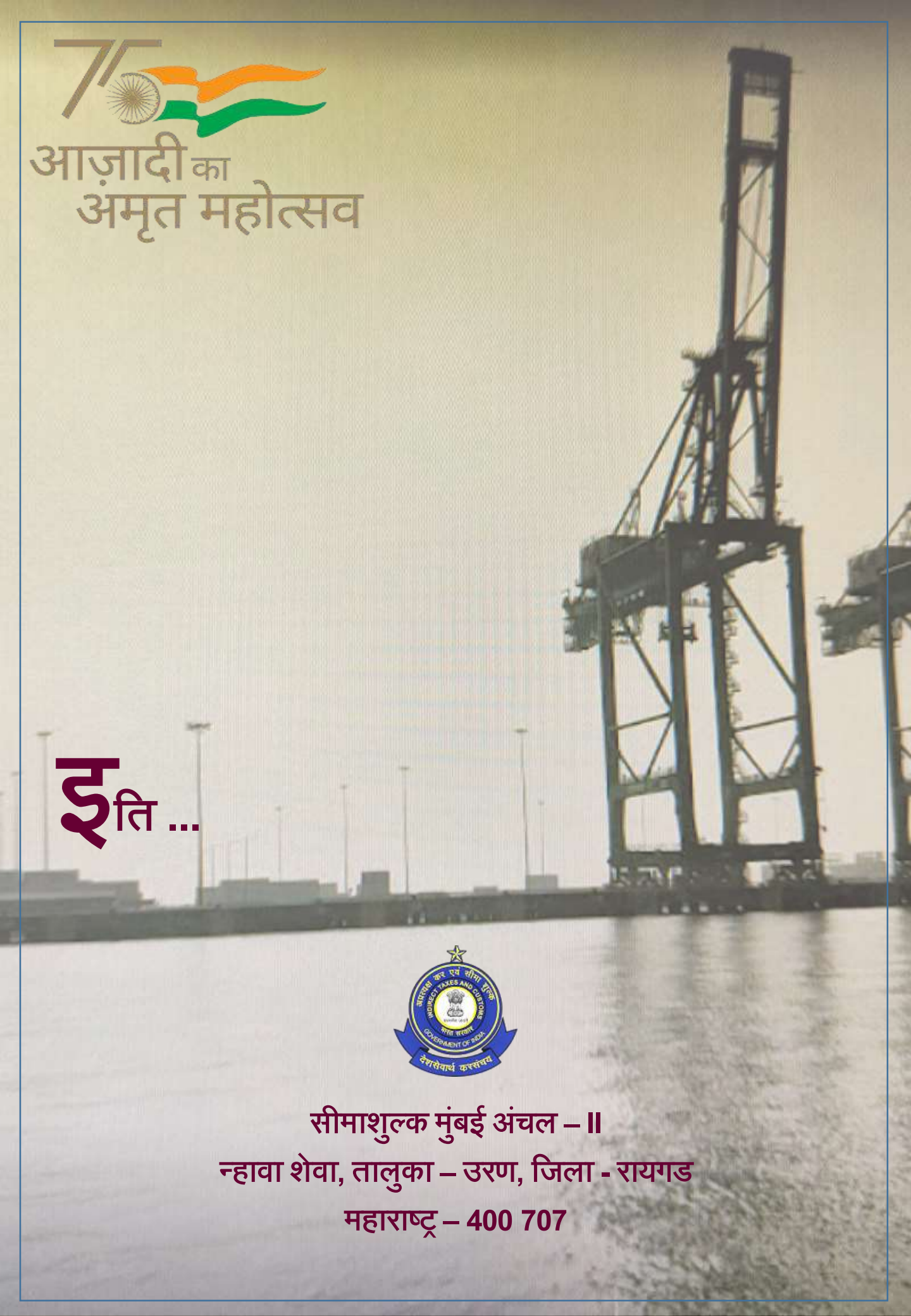

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इति ...

सीमाशुल्क मुंबई अंचल – II

न्हावा शेवा, तालुका – उरण, जिला - रायगड

महाराष्ट्र – 400 707